

# हंसलोक संदेश



श्री गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं!



## हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-9  
सितम्बर, 2025  
भाद्रपद-आष्टम, 2082 वि.स.  
प्रकाशन की तारीख  
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)  
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),  
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महरौली,  
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा  
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल  
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020  
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,  
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,  
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: [hansloksandesh@gmail.com](mailto:hansloksandesh@gmail.com)

Website: [www.hanslok.org](http://www.hanslok.org)

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

## संपादकीय

### माता-पिता की सेवा ही सच्चा श्राद्ध

**मा** ता धरती के समान धीर, गंभीर, सहनशील व धात्री है और पिता आकाश के समान व्यापक, संरक्षक और महान हैं, वे धरती के प्रकट देव हैं। माता-पिता का अपनी संतानों के प्रति असीम प्रेम और स्नेह का एक ऐसा बंधन है जो निस्वार्थ, गहरा और जीवन भर बना रहता है। वे अपनी संतानों की देखभाल, सुरक्षा और मार्गदर्शन करते हैं और उनके हर सुख-दुःख में साथ खड़े रहते हैं। माता-पिता अपने बच्चों से बिना किसी शर्त के प्यार करते हैं, उनकी खुशी और भलाई के लिए हमेशा प्रयास करते हैं। वे अपने बच्चों को हर खतरे से बचाने और उनकी हर ज़रूरत का ध्यान रखने की पूरी कोशिश करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों को सही और गलत का भेद सिखाते हैं, उन्हें जीवन में सफल होने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। माता-पिता अपने बच्चों के लिए अपने सुखों का त्याग करते हैं और अपनी खुशियों से बढ़कर उनके बारे में सोचते हैं। माता-पिता की ममता बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास के लिए आवश्यक है। यह बच्चों को सुरक्षित और संरक्षित महसूस कराती है, जिससे वे आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान विकसित कर पाते हैं। माता-पिता की ममता बच्चों को जीवन में सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है। यह बच्चों को अच्छे इंसान बनने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करती है। माता-पिता की ममता एक अनमोल उपहार है, जिसका कोई मूल्य नहीं है।

रामचरित मानस में लिखा है कि माता-पिता, गुरु और स्वामी की बात बिना ही विचारे शुभ समझकर माननी चाहिए। माता-पिता का सदैव आदर कीजिए, उन्हें हर चीज देने की पूरी कोशिश करें जोकि उनकी ज़रूरत हो। अपने माता-पिता को कभी मत जाइए कि आपने उनके लिए क्या-क्या किया है। उनकी बातें कभी नहीं काटनी चाहिए। माता-पिता से कभी भी ऊँची आवाज में बातें ना करें, सफर में जाते वक्त उनकी राय ज़रूर लें। उन्हें अपने साथ भोजन करायें, उन्हें हर छोटी-बड़ी खुशियों में सदैव शामिल करें। आपकी हर छोटी-बड़ी खुशी उनकी वजह से ही है, आपको इस धरती पर जन्म लेने का सौभाग्य उन्हीं की वजह से मिला है। आप आज जो भी जितने भी कामयाब हैं, उसमें कहीं ना कहीं उन्हीं का योगदान है। ये जीवन की नियति है, जैसा आप आज अपने माता-पिता के साथ करेंगे, वैसा ही सीखकर आपके बच्चे आपके साथ करेंगे। सनातन शास्त्र कहते हैं कि माता-पिता के समान कोई दूसरा वांछित फल देने वाला नहीं है। जो पुत्र अपने माता-पिता के चरण धोता है, वह उनकी कृपा से समस्त तीर्थों के दर्शन का फल भोगता है। जो पुत्र अपने माता-पिता को भोजन, वस्त्र, स्नान और सेवा-सम्मान से पृष्ठ व संतुष्ट करेगा, उसे पृथ्वी दान के समान पुण्य प्राप्त होगा। जो पुत्र अपने पिता या माता का परित्याग कर देता है, उन पर चिल्लाता है या उनका अपमान करता है, वह निःसंदेह रौरव नामक नरक में जाता है। जो पुत्र गृहस्थ होकर अपने वृद्ध माता-पिता का भरण-पोषण नहीं करता, वह नरक में जाता है और उसे अवश्य ही कष्ट उठाना पड़ता है। मनुष्य माता-पिता की कृपा से ही इस संसार में रहता है। इसलिए हर वर्ष पितृ पक्ष हमें यही संदेश देता है कि हम अपने माता-पिता की समान सहित सेवा कर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें, तभी उनके प्रति किया गया श्राद्ध-कर्म सफल और सार्थक माना जायेगा। ■

# महारात्रियों में विशिष्ट हैं शारदीय नवरात्र

**S**नातन संस्कृति केवल आस्था और परंपरा की जननी नहीं, बल्कि चेतना, ऊर्जा और ज्ञान का जीवंत प्रवाह है। इसमें काल, ऋतु, प्रकृति और ब्रह्माण्ड के चक्रों के अनुरूप जीवन का विधान रचा गया है। सनातन परंपरा में 'रात्रि' केवल अंधकार का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मबोध, साधना और अंतर्मर्थन की शुभावस्था है। इन 'महारात्रियों' में दिव्य ऊर्जा का पृथ्वी और चेतना में विशेष प्रवाह होता है। इनमें 'शारदीय नवरात्र' को सर्वाधिक प्रभावशाली और लोकप्रिय माना गया है; क्योंकि यह आत्मबल और सृजन-शक्ति के जागरण का पर्व है। यह केवल व्रत, कथा और पूजन तक सीमित नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन पद्धति है जो आधुनिक मानव के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। सनातन संस्कृति के त्योहार केवल उत्सव नहीं, बल्कि आध्यात्मिक जागरण और सामाजिक कल्याण के माध्यम हैं। उनमें भी कुछ रात्रियां ऐसी होती हैं, जिन्हें महारात्रियां कहा गया है। अर्थात् साधना और शक्ति उपासना के लिए अत्यंत शुभ समय। सनातन शास्त्रों में चार विशेष रात्रियों का वर्णन है, जिन्हें 'महारात्रि' कहा जाता है। ये साधारण रातों से भिन्न होती हैं और आध्यात्मिक साधना के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। ये चार महारात्रियाँ हैं- कालरात्रि, महारात्रि, मोहरात्रि और दारुणरात्रि।

**1. कालरात्रि-** यह दीपावली की रात होती है, जिसे माँ काली के प्राकट्य का दिन माना जाता है। यह अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। आत्मदीप व लक्ष्मी आराधना की महारात्रि है। सभी साधक अपने लक्ष्य को पाने के लिए साधना करके अपने अभीष्ट की सिद्धि में बड़ी सरलता से सफल हो जाते हैं।

**2. महारात्रि-** इसे महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। यह वह रात्रि है, जब भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। यह आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक है। यह रात्रि शिव-तत्व के जागरण की होती है। शिव का अर्थ है कल्याण, और यह

रात्रि साधक को वैराग्य, तितिक्षा और समाधि के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करती है। 'शिवरात्रि' में रात्रि भर जागरण, ध्यान, जलाभिषेक और रुद्राष्टक का पाठ विशेष फलदायक होता है।

**3. मोहरात्रि-** यह जन्माष्टमी की रात्रि है, जब भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ था।



शारदीय नवरात्र, 22 सितम्बर से 02 अक्टूबर पर विशेष

**4. दारुण रात्रि-** यह होलिका दहन की रात्रि होती है। यह रात्रि बुराई के दहन और सत्य की विजय का प्रतीक है। हिरण्यकश्यपु जैसे अहंकार का दहन होलिका के साथ होता है और भक्त प्रह्लाद जैसे भक्त को दिव्य संरक्षण मिलता है। यह सामाजिक और मानसिक विकारों के परित्याग की रात्रि है। भारतीय ऋषियों ने इन्हीं रात्रियों को तप, ध्यान और चित्त-शुद्धि का श्रेष्ठ अवसर माना है। इन चार महारात्रियों में, दो का संबंध सीधे तौर पर शक्ति की उपासना से है- एक नवरात्रि में माँ जगदंबा की महानिशा पूजा और दूसरी कालरात्रि। शारदीय नवरात्रि को इन महारात्रियों में विशेष स्थान प्राप्त है, क्योंकि यह शक्ति की आराधना का सबसे लंबा और महत्वपूर्ण पर्व

है। शारदीय नवरात्र देवी शक्ति की उपासना के लिए समर्पित नौ दिवसीय आत्म-उत्थान की उत्कृष्ट नौ रात्रियाँ होती हैं, जिसमें देवी के नौ स्वरूपों की साधना के लिए होती हैं जो क्रमशः साधक को भिन्न-भिन्न मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक अवस्थाओं से होकर गुजारती हैं। यहां संपृष्ठ कर देना आवश्यक है कि अन्य महारात्रियों से शारदीय नवरात्र का एक अनूठा विशिष्ट प्रभाव होता है। क्योंकि शारदीय नवरात्र का आयोजन वर्ष के उस समय होता है, जब ऋतुएं बदल रही होती हैं। इस अवधि में पाचन शक्ति कमजोर, संक्रमण का भय अधिक और मानसिक चंचलता चरम पर होती है। ऐसे में उपवास, संयमित आहार, ध्यान, पूजन और ब्रह्मचर्य का पालन अत्यंत लाभदायक होता है। हमारे सनातन संस्कृति के पुरातन शास्त्रों, जैसे- देवी भागवत, मार्कण्डेय पुराण और दुर्गा

सप्तशती में नवरात्रि की महिमा विस्तार से वर्णित है। देवी माहात्म्य का वर्णन करते हुए देवी की इस प्रकार स्तुति की गई है-

**शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे।  
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥**

यानी दीनता का आर्तभाव लिए शरणागत भक्तों के सारे दुःख दर्द दूर करने वाली देवी नारायणी आपको बार-बार नमस्कार है। 'देवीं वाचमजानन्तो, देवा देवेषु पूजिता।' अर्थात् देवी ही वाणी, शक्ति और सृष्टि का मूल हैं। 'देवीं वाचमजानन्तो, देवा देवेषु पूजिता।' अर्थात् देवी ही वाणी, शक्ति और सृष्टि का मूल हैं। देवी के नव स्वरूपों की उपासना के लिए समर्पित यह पर्व आत्मा को शक्ति और विवेक से युक्त कर संपूर्ण जीवन शक्ति को ऊर्ध्वगमी बनाता है। नवरात्रि केवल स्त्री शक्ति की आराधना नहीं, बल्कि जीवन की समग्र ऊर्जा को जागृत करने का माध्यम है। शारदीय नवरात्रि आश्विन मास की शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होकर नवमी तक चलता है। यह ऋतु परिवर्तन का समय होता है- जब बाहरी प्रकृति के साथ-साथ भीतर की ऊर्जा भी रूपांतरित होती है।

नवरात्रा में केवल देवी का पूजन ही नहीं होता, यह आत्मसाक्षात्कार और चित्तशुद्धि की विशिष्ट प्रक्रिया भी है। यह पर्व साधक को भीतर के अंधकार से निकालकर चेतना की रोशनी में लाता है। इस अवधि में विशिष्ट साधना व ध्यान और मंत्रजप से आत्मा शक्तिशाली होती है। शारदीय नवरात्रि की साधना से साधकों को वैज्ञानिक लाभ भी उपलब्ध होता है। इस अवधि में व्रत-उपवास करने से पाचन प्रणाली शुद्ध होती है। ऋतु संक्रमण काल में शरीर की इम्युनिटी बढ़ती है। सातिक भोजन ग्रहण करने और ध्यान से मानसिक स्वास्थ्य सुदृढ़ होता है। जाहिर है नवरात्र में ध्यान साधना से मन की वृत्तियाँ शांत होती हैं। साधना के दौरान जप, दीप प्रज्वलन, स्वाध्याय और मौनव्रत अत्यंत लाभकारी होते हैं। मंत्रों की ध्वनि लहरियाँ नाड़ी तंत्र और मस्तिष्क में सामंजस्य स्थापित करती हैं। आधुनिक युग में मानसिक अवसाद, अनिद्रा, चिंता, तनाव जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, ऐसे माहौल में नवरात्रि साधना इनसे निजात पाने का एक प्रभावी उपाय है। उपवास से शरीर का डिटॉक्स, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है। ध्यान और मंत्रजप साधना से चित्त की शांति व एकाग्रता में वृद्धि होती है। गरबा, दुर्गा पूजा में कन्या पूजन की परंपरा से समाज में सौहार्द और संस्कृति का पुनर्संचार होता है। स्त्री शक्ति की उपासना की परिपाठी सामाजिक दृष्टिकोण को भी बदल देती है। नवरात्रि साधना आत्म-जागरण, साधना, संयम और सेवा का पर्व है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि शक्ति केवल बाह्य नहीं, अपितु अंतरिक जागरण का नाम है। जब हम शारदीय नवरात्रि की नौ रात्रियों में अपने भीतर की नकारात्मकताओं का त्याग कर देवी की

साधना से जुड़ते हैं, तब ही हमारे जीवन में 'विजयदशमी' का उदय होता है अर्थात् भीतर के विजय का श्री गणेश होता है।

आज का मनुष्य तनाव, भ्रम और मानसिक थकान से ग्रस्त है। ऐसे समय में नवरात्रि एक आंतरिक जागरण के रूप में कार्य करता है। युवाओं को यह पर्व सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविकास का मार्ग देता है। गृहस्थों को पारिवारिक जीवन में संतुलन और सामंजस्य सिखाता है। साथ ही वृद्धों के लिए शारदीय नवरात्रि की साधना का बहुत ही श्रेष्ठ समय होता है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में 'माँ दुर्गा शक्ति की कोई कल्पना नहीं, स्वयं शक्ति हैं। उन्हें अपने भीतर अनुभव करना ही नवरात्रि का मूल उद्देश्य होता है।' यह पर्व शरीर, मन और आत्मा तीनों को शुद्धि, शक्ति और संतुलन प्रदान करता है। यह पर्व हमें बताता है कि सच्चा देवी पूजन केवल मूर्ति या मंदिर में नहीं, अपने भीतर शक्ति को पहचानने और उस शक्ति से जीवन को आलोकित करने में है।

भगवती केवल बाहर नहीं, हमारे भीतर शक्ति, साहस और सत्त्व के रूप में स्थित हैं। शारदीय नवरात्रि की उपासना एक अद्भुत यात्रा है- मूल से शिखर तक, स्थूल से सूक्ष्म तक, और भक्त से ब्रह्म तक। देवी के नव रूपों की आराधना न केवल मानसिक शांति देती है, बल्कि हमारे आचार, विचार और व्यवहार को भी दिव्य बनाती है। शारदीय नवरात्रि उत्सव मात्र एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि अंतःशक्ति जागरण की विज्ञानसम्मत साधना वाली प्रक्रिया है। यह आत्मा और प्रकृति के अद्वैत का पर्व है, जिसमें भक्त मां के विभिन्न स्वरूपों की उपासना के माध्यम से अपने भीतर स्थित चैतन्य की पहचान करता है। देवी शक्तिस्वरूपा चेतना है। चेतना ही जीवन है। यह वह विज्ञान है, जहाँ साधना मन, शरीर और आत्मा तीनों को ऊर्जावान बनाती है। यह पर्व आधुनिक मानव को न केवल आत्मनिरीक्षण, बल्कि आत्म-उन्नयन का मार्ग भी दिखाता है।

नवरात्रि में प्राकृतिक पूजा पद्धति होती है तुलसी, बेलपत्र, दूर्वा, पुष्प, दीपक, कुमकुम आदि का प्रयोग पर्यावरण अनुकूल होता है। मिट्टी की मूर्तियाँ, दीपदान, वृक्षपूजन आदि से हम प्रकृति के प्रति श्रद्धा और संरक्षण का भाव सीखते हैं। जहाँ पृथ्वी की पूजा होती है, वहाँ संतुलन और संतोष बढ़ता है। नवरात्रि केवल मंदिर या पूजा तक सीमित नहीं यह व्यक्ति के भीतर शक्ति, शांति और सच्चाई को पुनः जागृत करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। यही है नवरात्रि का सार। शारदीय नवरात्रि कोई सामान्य उत्सव नहीं, बल्कि यह जीवन के संपूर्ण विकास का विज्ञान है जिसमें शरीर, मन और आत्मा तीनों के शोधन की प्रक्रिया अंतर्निहित है। यह पर्व केवल देवी की मूर्ति पूजन या पारंपरिक आडंबर नहीं, बल्कि आध्यात्मिक साधना, वैज्ञानिक उपचार और सामाजिक समरसता का संगम है। ■

# राम कृष्ण से को बड़ो, तिन्हुं तो गुरु कीन

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

**प्रे** मी सज्जनों! एक राजा ने अपने एक मस्त हाथी को खूब शराब पिलायी और भ्रमण करने के लिए नगर से बाहर निकला। कुछ दूर जाने पर शराब के नशे में मस्त होकर हाथी ने महावत को नीचे गिराकर कुचल दिया। यह हाल देखकर हाथी पर बैठा राजा कूद गया और भागकर अपनी जान बचाई। हाथी भी राजा को मारने के लिए पीछे-पीछे भाग चला।

राजा भागता जाता था और पीछे की ओर देखता जाता था। भागते-भागते राजा अचानक एक अंधे कुएं में गिर गया, परन्तु गिरते-गिरते भी कुएं के ऊपर बड़े भारी पीपल की जड़ों में टंग गया जो कि कुआँ में लटक रही थीं। हाथी भी दौड़ता हुआ उसी कुएं पर आकर खड़ा हो गया और राजा के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

राजा ने ऊपर की ओर देखा कि एक सफेद और एक काला चूहा अपने बारीक दांतों से उस जड़ को बड़ी तेजी से काट रहा है- जिसके सहारे राजा अटका हुआ था। राजा ने झाँककर नीचे देखा तो अनेक साँप, बिछू, कान-खजूरे रेंग रहे हैं जो कि मुँह फाड़े राजा के गिरने के इन्तजार में थे। ऊपर हाथी भी खड़ा हुआ था। ऐसी अवस्था में राजा सोचता है कि यदि ऊपर चढ़ता हूँ; तो हाथी मार देगा और जड़ के सहारे रहता हूँ, तो चूहों ने जड़ को काट ही देना है, इस पर नीचे गिरँगा और बिषेले जानवर मुझे खा जायेंगे।

इतने में राजा की नजर पीपल पर लगे हुए एक शहद के छत्ते पर पड़ी। छत्ते को देखकर राजा विचारने लगा, अहा! शहद कितना मीठा होता है, इस छत्ते से शहद गिरेगा और मैं खाऊँगा। हाथी राजा को मारने के लिए खड़ा है, कुएं में जड़ें कट रही हैं, उसकी चिन्ता को और नीचे गिरने पर क्या गति होगी, इन सब बातों को राजा भूल गया। राजा को केवल एक ही बात याद रह गयी कि शहद मीठा होता है, टपकेगा और मजे से खाऊँगा। ठीक ऐसी ही गति जीव की है। जीवरूपी राजा भी मनरूपी हाथी को मोहरूपी शराब पिलाकर

संसाररूपी जंगल का भ्रमण करने को निकला, परन्तु मनरूपी हाथी ने विवेकरूपी महावत को पहले ही मार दिया। इस प्रकार जीव भागता-भागता संसाररूपी अंधकूप में गिर गया है और परन्तु सद्गुरु की कृपा से जीव बहने से बच जाते हैं।

संशय होता है और जड़ माया जो साथ जाने वाली नहीं है, उसमें दिन-रात लगा रहता है। माया की प्रबल धारा में सभी जीव बह रहे हैं, परन्तु सद्गुरु की कृपा से जीव बहने से बच जाते हैं।

**बहते थे बहे जात थे,  
लोक वेद के साथ।  
पैंडे में सद्गुरु मिले,  
दीपक दीन्हा हाथ॥।**

माला, तिलक, तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ और रोजे-नमाज में बहे जा रहे थे। न जाने कितने दिन से बह रहे थे, पर कोई ठिकाना नहीं मिला। अब जबकि सद्गुरु मिल गये, तो उन्होंने ज्ञान-दीपक देकर हमारे अन्दर का अंधकार मिटा दिया, जिससे प्रबल धारा में बहने से बच गये।

जीव ईश्वर का अंश है और अविनाशी है। उस अविनाशी तत्व को जानने में संसार के लोग लगे हुए हैं। उस तत्व की खोज करते-करते न जाने कितने जन्म बीत गये। ऋषि-मुनियों के समय में भी हम थे, भगवान राम, भगवान कृष्ण आदि अवतारों, कबीरदास, गुरु नानकदेव जी, तुलसीदास जी आदि संतों के समय में भी हम थे। चाहे पशु योनि हो या मनुष्य योनि। परन्तु हम थे अवश्य ही। बराबर चौरासी की धारा में कभी ऊपर, कभी नीचे गोते खा ही रहे हैं। अब मनुष्य जन्म मिल गया, तो लोक और वेद की धारा में बहने लगे। इस अगम धारा से गुरु की कृपा के बिना निकल नहीं सकते। संत कहते हैं-

**करनधार सदगुरु दृढ़ नावा।  
दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥।**

समुद्र को पार करने के लिए जिस प्रकार दृढ़ और मजबूत जहाज की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार भवसागर को पार करने के लिए गुरु की आवश्यकता है। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

**गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई॥  
जाँ बिरंचि संकर सम होइ॥।**

जीव ब्रह्मा, विष्णु और महेश जैसा शक्तिशाली तो हो सकता है, परन्तु गुरु के बिना



जीव का कल्याण नहीं हो सकता अर्थात् वह संसार के मायारूपी भवसागर से पार नहीं हो सकता। संत कहते हैं-

**राम कृष्ण से को बड़ा,  
तिन्हाँ तो गुरु कीन।  
तीन लोक के जो धनी,  
सो गुरु आगे आधीन॥  
गुरु बिन माला फेरता,  
गुरु बिन करता दान।  
गुरु बिन सब निष्फल गया,  
बूझे वेद पुरान॥**

एक कथा आती है कि नारद जी बैकुण्ठ में भगवान विष्णु के पास जाया करते थे। एक दिन नारद जी भगवान के दर्शन करके वापस लौट रहे थे कि अकस्मात् किसी कारण से नारद जी को वापस लौटकर भगवान के पास जाना हो गया। जब वापस आये, तो देवदूतों को मिट्टी खोदते देखकर नारद जी ने भगवान से पूछा- प्रभु! यह देवदूत मिट्टी क्यों खोद रहे हैं? भगवान कहने लगे- नारद! निगुरा

मनुष्य पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ पैर रखता है, वह भूमि अपवित्र हो जाती है। निगुरे का दिया हुआ भाग सूर्य, चन्द्र और देवता भी ग्रहण नहीं करते। चूंकि तुम निगुरे हो, इसलिए तुम्हारे यहाँ खड़े होने से भूमि अपवित्र हो गयी और यहाँ की मिट्टी खोदकर बाहर फेंकी जा रही है। नारद जी कहने लगे- भगवान! साक्षात् आपके दर्शन करने पर भी क्या मुझे गुरु के पास जाने की जरूरत है। भगवान विष्णु कहने लगे- नारदजी! गुरु की बात तो गुरु ही जानते हैं। बिना गुरु के साक्षात् मेरे दर्शन करने से भी कुछ नहीं होता।

नारद जी ने अपने हृदय में संकल्प किया कि मेरे से अधिक कौन विद्वान और ज्ञानी मिलेगा, परन्तु जो कोई भी कल मुझे प्रातःकाल सबसे पहले मिलेगा, उसी को गुरु धारण करूँगा। दूसरे दिन प्रातः ही नारद जी को सबसे पहले एक मछुवारे के दर्शन हुए जो मछली भरकर कहीं से आ रहा था। नारद जी ने संकल्प के अनुसार मछुवारे को साइंग दण्डत् प्रणाम किया, तो मछुवारा पीछे हटकर कहने लगा- अरे! तुम महात्मा होकर मुझे प्रणाम क्यों करते हो? नारद जी ने कहा- मैंने कल संकल्प लिया था कि जो प्रातःकाल सबसे पहले मुझे

मिलेगा, मैं उसे अपना गुरु मानूँगा! सो अब से आप मेरे गुरु हो! मछुवारे ने कहा- राम राम! मैं तो मछली मारने वाला हूँ, मुझे गुरु क्यों बनाते हो? नारद जी ने कहा- कोई भी हो, मेरे तो आप ही गुरु हैं। मछुवारे ने कहा- अच्छा! नदी के पार मेरी कुटिया है, यदि आवश्यकता पड़े तो कभी आ जाना।

नारद जी की परीक्षा थी और हमारे लिए शिक्षा है कि गुरु एवं गुरु की कृपा के बिना जीव का भला नहीं हो सकता। वह भगवान की एक लीला थी, वास्तव में तो भगवान ही मछुवारे का

**यद्यपि सच्चाई शरीर के अन्दर ही मौजूद है,  
पर जीव को सच्चाई का ज्ञान न होने के कारण  
भटकता रहता है। चेतन में इसे संशय होता है  
और जड़ माया जो साथ जाने वाली नहीं है,  
उसमें दिन-रात लगा रहता है। माया की प्रबल  
धारा में सभी जीव बह रहे हैं, परन्तु सद्गुरु की  
कृपा से जीव बहने से बच जाते हैं।**

रूप धरकर आये थे। नारद जी विष्णुलोक में पहुँचे तो भगवान विष्णु ने पूछा- कहो नारद जी! क्या आपने गुरु धारण कर लिया। नारद जी कहने लगे- महाराज! गुरु तो धारण कर लिया, पर यह कहना ही चाहते थे कि वह मछुवारा है। भगवान कहने लगे- नारद जी! अब तो तुम कभी भी चौरासी से छूट ही नहीं सकते, क्योंकि तुमने गुरु में ‘परन्तु’ लगाया है। नारद जी भगवान से कहने लगे- प्रभु! क्या कोई ऐसा उपाय या साधन है कि जिसके करने से चौरासी से छूट जाऊँ। भगवान कहने लगे- इसका उपाय तो गुरु महाराज ही बता सकते हैं।

नारद जी नदी पार कर गुरु महाराज जी के पास पहुँचे और जाते ही चरणों में लेट गये। गुरु महाराज जी ने आशीर्वाद दिया और पूछा- कहो नारद जी, कैसे आये? नारद जी ने विष्णु भगवान के पास जाने की बात सुनाते हुए कहा कि भगवान ने मेरे से पूछा कि गुरु धारण कर लिया परन्तु, इतना ही कहा था कि भगवान ने कहा- ‘अब तुम नरक से छूट नहीं सकते।’ सो आप कृपा करके अब नरक से छुटकारा पाने का उपाय बताइये।

गुरु महाराज ने कहा- तुम विष्णु भगवान से कहना कि जिस नरक से मुझे कभी नहीं छूटना है, उसे एक कागज पर बना दो। जब भगवान कागज पर चौरासी का नक्शा बना देंगे, तो उसके ऊपर लेट जाना और कहना कि यह भी तुम्हारा बनाया हुआ है और वह भी तुम्हारा बनाया हुआ है इसलिए अब मैंने नरक को भोग लिया। जब भगवान पूछे कि किसने बताया, तो कहना गुरु महाराज जी ने बताया है।

नारदजी भगवान के पास पहुँचे और कहा- भगवान! जिस नरक से कभी नहीं छूटना है, उसे जरा कागज पर तो बना दो। भगवान ने नरक का नक्शा एक कागज पर बना दिया। नारद जी ने कागज को जमीन पर रखकर लेट लगायी और खड़े होकर कहने लगे- प्रभु! मैंने चौरासी को भोग लिया है। भगवान ने कहा- नारद जी! यह उपाय किसने बताया? नारद जी ने कहा- गुरु महाराज ने बताया है। कहने का भाव यह है कि गुरु के बिना जीव चौरासी से नहीं छूट सकता है। धर्मदास जी भी कहते हैं-

**गुरु पढ़ीयाँ लागूं नाम लखाय दीजो रे।।**

**जन्म जन्म का सोया मेरा मनुवां,**

**शब्दन मार जगाय दीजो रे ॥।**

**गहरी नदिया अगम बहे धरवा,**

**खेई के पार लगाय दीजो रे।।**

**‘धर्मदास’ की अरज गुसाई,**

**अबकी खेप निभाय दीजो रे।।**

परमात्मा का सर्वव्यापक नाम जो अलख है, सबके अन्दर होते हुए भी नजर नहीं आता। आँखें बन्द करके अन्दर देखते हैं, तो अन्दर अँधेरा है, बाहर आँखें खोलकर देखते हैं, तो बाहर भी माया ही दिखायी देती है। इसलिए कहा है, हे गुरु महाराज! ज्ञान का दीपक जलाकर उस अलख नाम को लखा दो अथवा बता दो। जीव गुरु महाराज जी से प्रार्थना करते हुए कहता है- हे गुरु महाराज! मेरा मन जन्म-जन्मान्तरों से मोह की नींद में सो रहा है, शब्दों की मार से इस मन को जगा दो। संसार एक गहरी नदी है, जिसका ओर-छोर नहीं है और इसकी अगम धारा में सभी जीव बह रहे हैं, आप कृपा करके पार लगा दो। धर्मदास जी कहते हैं कि हे गुरु महाराज! अबकी बार निभा लो अर्थात् अपने चरणों की भक्ति प्रदान कर दो।

# जिन रचा शरीर तुम्हारा, उसका क्यों नाम बिसारा

श्री भोले जी महाराज

**प्रे** मी सज्जनों! अभी आपने भजन सुना कि ‘सन्देशा सन्त फकीरों का, तुम्हें याद कोई दिन आयेगा।’ जब हमारी काया से प्राण निकल रहे होंगे, तब हमको याद आयेगा कि हमारे शहर में सन्त-महात्मा आये थे। उनका हमने ध्यान से सत्संग नहीं सुना और अपने शरीर को भोग-पदार्थों में ही गंवा दिया। बचपन के बाद जवानी और जवानी के बाद बुढ़ापा आ गया, लेकिन हमने भगवान के सच्चे नाम को जानकर उसका भजन नहीं किया। जब काल आता है, तो वह किसी को भी नहीं छोड़ता। न जाने वह कब, किसको कहां खींचकर ले जाये। भजन में कहा है-

**रे मन ये दो दिन का मेला रहेगा,  
कायम न जग का झामेला रहेगा।  
इससे तो आगे भजन ही है साथी,  
हरि के भजन बिन अकेला रहेगा॥**

संसार से जाने के बाद केवल भगवान के भजन की कमाई ही मनुष्य के साथ में जायेगी, बाकी संसार का सब कुछ यहीं पर छूट जायेगा। एक सेठ जी थे और उनके पास बहुत धन था। एक साधु महाराज उनके पास आये। वे कहने लगे- सेठ जी! आपका यह मकान एक धर्मशाला है। सेठ ने कहा- भाई! यह तो मेरा घर है। आपने कैसे कह दिया कि यह धर्मशाला है। साधु महाराज ने कहा कि इस मकान में आपसे पहले कौन रहते थे? सेठ ने जवाब दिया- मेरे दादा, परदादा रहते थे। साधु महाराज ने पूछा कि आज वे सब कहां हैं? सेठ ने कहा- महाराज! वे सब चले गये। साधु ने कहा- आप भी एक दिन चले जाओगे, आपके बच्चे भी यहां से चले जायेंगे, तो यह मकान एक धर्मशाला ही तो हुआ। सेठ जी ने सोचा कि साधु महाराज की यह बात तो बहुत सही है। यहां तो हमेशा कोई नहीं रह पाया। यह संसार तो चंद



दिनों का मेला है। भजन में कहा-

**दो दिन का जग में मेला,  
सब चला चली का खेला॥**

यह सारा संसार दो दिन का ही मेला है। यहां पर स्थिर कोई नहीं है, सबको एक दिन यहां से जाना होगा। साधु महाराज के सत्संग का सेठ जी पर बहुत असर हुआ। वे साधु के चरणों में गिर गये तथा उनसे आत्मज्ञान को जानने की इच्छा प्रकट की। साधु महाराज ने जब सेठ जी को आत्मज्ञान दिया, तब उनकी समझ में आया कि वाकई में यह बात बिलकुल सच है। संसार का सब कुछ यहीं पर छूट जायेगा, केवल प्रभु के सच्चे नाम की कमाई ही साथ में जायेगी। उस नाम की कमाई करने के लिए हमने भगवान के सच्चे नाम को ढूँढ़ा है, जानना है। भजन में कहा-

**सुनो-सुनो बचन नर नारी,  
हरि भजन करो सुखकारी।  
जिन रचा शरीर तुम्हारा,  
उसका क्यों नाम बिसारा।  
क्यों देह मनुज की धारी,  
हरि भजन करो सुखकारी॥**

हमने जो यह मनुष्य शरीर धारण किया हुआ है, वह किसलिये धारण किया

है? पशु-पक्षी और अन्य योनियों में हम केवल भोगों को भोग सकते हैं, आत्मा के ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकते; भगवान के सच्चे नाम का सुमिरण नहीं कर सकते। केवल मनुष्य शरीर में ही हम आत्मज्ञान को जान सकते हैं और भगवान का भजन कर सकते हैं। भगवान बुद्ध जिनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। बचपन में ज्योतिषियों ने उनके पिता शुद्धोधन से कहा कि इनको साधु-सन्तों से दूर रखना, उनको इनके पास मत जाने देना। यदि इनको वैराग्य हुआ, तो एक दिन ये घर-परिवार छोड़ देंगे। एक दिन सिद्धार्थ अपने मंत्री के साथ नगर भ्रमण पर निकले। रास्ते में उन्होंने एक रोगी देखा फिर एक बूढ़े व्यक्ति को देखा और अंत में एक मुर्दा देखा। सिद्धार्थ के मन में विचार आया कि एक दिन मैं भी बूढ़ा हो जाऊँगा, मैं भी रोगी बन जाऊँगा और एक दिन मेरी भी मृत्यु हो जायेगी। इस घटना ने सिद्धार्थ को पूरी तरह से झकझोर दिया और उनको सांसारिक वस्तुओं से वैराग्य हो गया। वे सत्य की खोज में घर से बाहर निकल पड़े। जाकर एक वट वृक्ष के नीचे आँख बन्द कर बैठ गये। वे भगवान के ध्यान में लीन हो गये और उन्हें बोधत्व की प्राप्ति हुई।

# तेरा साईं तुझमें, जाग सके तो जाग

माताश्री राजेश्वरी देवी

**प्रे** मी सज्जनों! हमारा मन तो बाहर की चीजों में भटक रहा है, तो भगवान के भजन में मन कैसे लगेगा। भजन के बिना मन की गति बड़ी खराब हो गई है। एक कहानी आती है कि राजस्थान में एक ऊंट वाला कहीं जा रहा था, उसके हाथ से ऊंट की नकेल छूट गई। किसी राहगीर ने पूछा कि भाई ऊंट वाले, तू कहाँ जा रहा है? वह कहता है कि भाई, जहाँ यह ऊंट ले जायेगा, मैं वहाँ जा रहा हूँ। ऊंट इतना मस्त बन जाता है कि वह हाथ में ही नहीं आता, तो ऐसी ही गति मनुष्य के मन की भी बन गई है। मनुष्य ने बहुत कुछ अपने जीने के साधन जुटा लिये, पर उसने मन पर नियंत्रण नहीं किया। मन पर नियंत्रण नहीं होने से मानव अशांत होता जा रहा है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिसने मन नहीं जीता है, न वह योगी है, न संन्यासी है। जिसने मन को जीता, उसने संसार को जीत लिया। इसलिये मन के द्वारा योगी लोग ध्यान करने का साधन बताते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

ऊठत बैठत सोवत जागत नाम।  
कह नानक सद् भये तिनके काम॥

देखो, अन्त समय के लिए भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं- अन्त मता सो गता। जीवन भर मनुष्य जिस चीज के प्रति कर्म करता रहता है, अन्त समय उसको वही चीज याद आती है। इसलिये हे अर्जुन, तू सब तरफ से मन को हटा करके केवल मुझमें, परमात्मा में लगा। इसलिये आप लोग भी अपने गृहस्थ जीवन में रह करके भगवान का भजन-सुमिरण करो। भगवान श्री कृष्ण

कहते हैं कि अर्जुन तू दसों इन्द्रियों से लड़ाई कर और ग्यारहवें मन से मेरा चिन्तन कर। देखो, लड़ाई के मैदान में योद्धा दुश्मनों को भी मार रहा है, अपने को भी बचा रहा है और भगवान कहते हैं- तू सुमिरण कर। तुम लोगों को भी अपनी दसों इन्द्रियों से गृहस्थ जीवन की समस्याओं को हल करना है, क्योंकि युद्ध के समान हम भी उसमें लड़ाई कर रहे हैं, कितनी समस्याओं को हमें हल करना है और साथ-साथ मन को भी परमात्मा में लगाना है, मन को भी उस साधना में लगाना है। मैं कई लोगों से पूछती हूँ, तुम साधना करते हो? हाँ, हम साधना करते हैं। क्या साधना करते हो? हम तो गीता का पाठ करते हैं, हम तो रामायण का पाठ करते हैं। भाई, रामायण का पाठ और गीता का पाठ करने से ही ज्ञान नहीं होगा, मन की शान्ति नहीं होगी। थोड़ी देर के लिये महापुरुषों की जीवनी से शान्ति मिलती है और हमें तो अगाध शान्ति चाहिये। पानी मिल रहा है हमें आधा गिलास और प्यास लगी है पूरे गिलास की, तो प्यास कैसे मिटेगी। संत कबीरदास जी कहते हैं-

ज्यों तिल माहीं तेल है,  
ज्यों चकमक में आग।  
तेरा साईं तुझ में,  
जाग सके तो जाग॥



जैसे चकमक के अन्दर में अग्नि छिपी है, तिल के अन्दर तेल छिपा है तथा दूध में मक्खन छिपा है, इसी तरह से तुम्हारा भगवान तुम्हारे ही अन्दर है। तुम्हारे हृदय में भी प्रकाश रूपी शक्ति छिपी है, पर वह अपने आप नहीं जानी जाती है। उस शक्ति का ज्ञान सद्गुरु महाराज कराते हैं।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ,  
गहरे पानी पैठ।  
मैं बावरी ढूबन डरी,  
रही किनारे बैठ॥

जो ढूँढ़ते हैं, तलाश करते हैं, उनको अवश्य मिलता है। देखो, हम जब भाखड़ा डैम गये, तो वहाँ हमने पूछा कि अगर टर्बाइन के नीचे बड़े-बड़े कंकर, पत्थर रुक गये, तो तुम क्या करोगे? उन्होंने हमें वस्त्र दिखाये कि मां, हम इन वस्त्रों के द्वारा गोता लगाते हैं और उनके नीचे के पत्थर-रोड़ा निकालते रहते हैं, जिससे ये फिर चलती रहती हैं। हर वर्ष हम

इसके अन्दर डुबकियाँ लगाते हैं। कहने लगे- इस तरह जब हम कपड़ा बाँधकर जाते हैं, तो हमको पानी असर नहीं करता है, हम दूब नहीं सकते हैं। इन कपड़ों में वह ताकत है कि पानी डुबा नहीं सकता है। मनुष्य ने इतना बड़ा काम कर लिया, पर देखो, मौत पर मनुष्य काबू नहीं कर पाया, मौत के सामने वह हार चुका है। जिस तरह से हम नये वस्त्र धारण करते हैं और पुराने वस्त्रों को छोड़ देते हैं, योगी लोग भी ठीक उसी तरह से जब योग साधना करते हैं, तो उनको फिर इस संसार से मोह नहीं होता है। जैसे हमने एक पुराना कपड़ा बदला और नया धारण किया, इसी तरह से यह संसार चलता आ रहा है और योगी लोग इस चीज के मर्म को समझते हैं।

सज्जनों, जो ज्ञानी लोग होते हैं, वे इसी बात को जनाने के लिए संसार में आते हैं। एक बार एक माता बुद्ध भगवान के पास अपने मरे हुए पुत्र को लाती है और कहती है- महात्मन, मैंने सुना है कि तुम योगी हो, तुम इसकी जान को बचा दो, इसकी प्राणशक्ति को तुम वापस कर दो। तुम योगी हो और मैं विध्वा हूँ, मेरे जीवन का आधार यही है और इसका मेरे को इतना दुःख है कि इसकी मौत मेरे से सहन नहीं हो रही है। तो भगवान बुद्ध कहते हैं कि हे माता, न जाने कितनी बार तू इसकी माँ बन गयी और यह तेरी माँ बन गया। यह आत्मा आती-जाती रहती है, क्यों इसके प्रति तुम अफसोस कर रही हो। उस माता का जो मोह था, उसके कारण बुद्ध की एक भी बात का उस पर असर नहीं हुआ। आखिर बुद्ध सोचते हैं कि अब मैं क्या करूँ, फिर कहते हैं- अच्छा माँ, तुम ऐसा करो, तुम किसी ऐसे घर से सरसों ले आओ, जहां पर कोई मरा नहीं हो और मैं तुम्हारे पुत्र को

जीवित कर दूँगा। जब वह माता सरसों लेने के लिए गयी, तो उसने ऐसा नजारा देखा कि कदम-कदम पर, इंच-इंच पर मनुष्य की मौत हो रखी थी, तो वह माता बुद्ध के पास वापस आती है और कहती है- महात्मन, यहाँ तो अनेकों माताओं ने अपनी कोख को खाली करके शमशान भूमि में सुला रखा है। इसलिए मैं भगवान की नीति और मर्यादा का उल्लंघन नहीं करूँगी। यह मेरा बेटा नहीं है, मैं इसके

**भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिसने मन नहीं जीता है, न वह योगी है, न संन्यासी है। जिसने मन को जीता, उसने संसार को जीत लिया। इसलिये मन के द्वारा योगी लोग ध्यान करने का साधन बताते हैं।**

मोह के कारण दुःखी थी। अब मुझे तुम्हारे आश्रम में आकर ज्ञान हो गया है कि क्या मनुष्य है और क्या यह आना-जाना लगा हुआ है। मनुष्य के पीछे यही बन्धन का कारण है, यही दुःख की जड़ है, इसलिए अब तो मुझे ज्ञान की अनुभूति करा दो। तब भगवान बुद्ध उसको समझाते हैं और आत्मतत्व का प्रत्यक्ष बोध कराते हैं और तब वह वृद्धा सुख का अनुभव करती है।

यह जो रात-दिन की पीड़ा है, जो मनुष्य को दुःखी बना रही है, इससे छुटकारा पाने के लिए ज्ञानियों के पास जाओ, ढूँढ़ो और तलाश करो। पर, ऐसा नहीं कि अकड़ करके बात करो। भगवान श्री कृष्ण भी कहते हैं- अर्जुन, इस ज्ञान का वही अधिकारी है, जिसका हृदय बालक जैसा है, जो श्रद्धा और प्यार से माँगता है, उसी को यह ज्ञान देना चाहिए और बाकी कदापि ज्ञान के अधिकारी नहीं हैं। इसलिए आप लोग देखो-

**बहुत काल करिअ सत्संगा॥**

## तबहि होइ सब संसय भंगा।

ज्ञानी लोग समय-समय पर आते रहते हैं और आत्मज्ञान का प्रचार करते हैं। देखो, वे लोग भी तुम जैसे भोगी बन सकते थे, तुम जैसे व्यापारी बन सकते थे। मैं कलकत्ता गयी। वहाँ एक बहुत बड़ा सेठ है, कितनी ही गाड़ियाँ तो मेरे लिए एयरपोर्ट पर लाया, जब मैं घर गयी, तो बहुत किस्म के व्यंजन तैयार करवाये, पर फिर भी वह लाला अशान्त! मैंने कहा- लाला, किसलिए तू अशान्त है, क्या कारण है? कहने लगे- माँ, कुछ दिनों से घाटा चल रहा है, इसलिए मैं अशान्त हूँ। मैंने कहा- लाला, धन का तो घाटा हो रहा है, पर तुझे यह भी खबर है कि तेरी प्राणशक्ति का भी घाटा हो रहा है, तुझे अन्दर का भी पता है! अरे, यह धन तो तुझे फिर मिल जायेगा, यह तो दूसरे जन्म में भी मिल सकता है, पर देख, हमारे सन्त कहते हैं कि-

**लख चौरासी भ्रमदियाँ,  
मानुष जनम पायो।  
कह नानक नाम संभाल,  
सो दिन नेड़े आयो॥**

तो मैंने कहा- अब तो नाम संभालने का समय है, नाम को संभालो। यह धन-दौलत किसी के साथ नहीं जाती है। रावण जिसकी सोने की लंका थी, वह भी कहता है- लक्ष्मण, अच्छा काम कल पर न छोड़ो। तो मैंने कहा लाला, सबसे पहले तो यह शरीर है, मनुष्य तन है और यह धन-दौलत तो फिर भी मिल जाती है। बिल्ली कहीं घास इकट्ठा नहीं करती है, भैंस नहीं पालती है, पर फिर भी देखो- वह दूध पी जाती है। कहीं-न-कहीं से उसको कर्म का भोग मिल ही जाता है। समय तेजी से बीत रहा है, भगवान के नाम का सुमिरण करो।

# दसवां द्वारा देहरा, तामें ज्योति पहचान

माताश्री मंगला जी

**प्रे** प्रेमी सज्जनों! आज हम सब लोग मास के इस दिन एकत्र हुए हैं और कल श्री भोले जी महाराज अपने जीवन का 71वां जन्मदिन पूरा करके 72वें वर्ष में प्रवेश करेंगे और गुरु महाराज जी, श्री माता जी से यही प्रार्थना करते हैं कि उनका जीवन सुखद रहे, लंबा रहे और इसी तरह समाज सेवा के कार्यों में संलग्न रहें और सेवा में लगे रहें, चाहे वह अध्यात्म की सेवा हो, धन की सेवा हो, सेवा एक बहुत बड़ा लक्ष्य होता है। आज कारगिल दिवस का पच्चीसवां वर्ष है, हमारे सैनिकों ने अपने देश के मान-सम्मान के लिए अपने शरीर को खोया, छोटी-छोटी उम्र वाले बच्चे थे, छोटे-छोटे बच्चे थे जो फौज में भरती हो जाते हैं और उन्होंने आज अपने देश के लिए, अपने देश के सम्मान के लिए इस जीवन को त्यागा, तो आज हम सब अपने द हंस फाउण्डेशन की तरफ से उनको नमन करते हैं, वे भी एक योद्धा थे; जिन्होंने कर्म और शरीर से अपने देश की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान किया, ऐसे ही ज्ञानी भक्त भी एक योद्धा होता है, सत्संग में दिन-रात हम सुनते हैं कि अपने जीवन की, अपने मानव तन की रक्षा करो; कैसे रक्षा करेंगे, तो सत्संग एक माध्यम है; सत्संग वह अमृत है जो हमें याद दिलाता है, बार-बार याद दिलाता है कि हे जीव, तू बढ़ नहीं रहा है, उम्र बढ़ रही है; तो अपने लक्ष्य के लिए, जिस लक्ष्य के लिए हमें मानुष चोला मिला है, उस लक्ष्य से हम दूर जा रहे हैं; लेकिन वह लक्ष्य तो पास आ रहा है। देख रहे हैं हम कि जब 10 के थे, तो बालपन गंवा दिया, 20 से 40 को जवानी में गंवा दिया, 40 के बाद ज़िम्मेदारियों में गंवा दिया है, तो क्या बचा है?

धीरे-धीरे यह शरीर भी शिथिल हो जाता है; तो जो जीवन हमारे पास शेष है, उसे संभालें, भगवान की भक्ति में लगावें।



मेरे को बड़ी खुशी होती है, जब छोटे बच्चे दरबार में उंगली पकड़ के अपने माता-पिता के साथ आते हैं और जब आते हैं, तो वे इधर-उधर देखते हैं, प्रसाद बंट रहा है, तो प्रसाद की तरफ जाते हैं, कहीं दर्शन हो रहे हैं, दरबार की सभी क्रियाएं चलती रहती हैं; लेकिन उनके कदम कम से कम सुमार्ग की ओर लगना शुरू हो गए हैं, लेकिन जब वही व्यक्ति 90 साल का, 80 साल का, जब उस लाइन में लगा होता है, तो दया आती है कि एक दिन इस जगह हम सबने पहुंचना है।

90 साल, 80 साल और अब थोड़ा समय रहेगा, कितनी भी लंबी आयु लेकर आएंगे, तो 100, कोई 105 साल जी जाता है, तो यह जो सत्संग का आयोजन होता है, सत्संग का जो आयोजन किया जाता है, यह हमें बार-बार याद दिलाता है। कई भक्त लोग कहते हैं- मां जी, हमारी बैटरी चार्ज हो जाती है सत्संग सुनकर। पिछले दिनों जो सत्संग था, उसमें शायद हम घर जाकर भूल जाते हैं। यह होगा, वह होगा, घर-गृहस्थी की सेवा बहुत कठिन भी है, लेकिन जब हम सत्संग में दोबारा आते हैं, तो फिर हमारी बैटरी चार्ज हो जाती है और जब बैटरी चार्ज होती है, तो ज्ञान का पूरा प्रकाश मिलता है। जब हम अपनी टॉर्च की बैटरी को बदलते हैं, नई

बैटरी डालते हैं, तो रोशनी और तेज हो जाती है, ज्ञान हमें भ्रम से दूर करता है, जो संसार में रहकर के हम विभिन्न परिस्थितियों में भ्रम के परत में रहते हैं, वे सब यह सत्संग दूर कर देता है। सत्संग हमें बार-बार याद दिलाता है कि हे जीव, तेरा कल्याण करने वाला तेरे ही अंदर छिपा है; क्योंकि उसे हम बाहर ढूँढ़ रहे हैं, हम तीर्थ में जाते हैं, भगवान के दर्शन करते हैं, स्नान करते हैं; पर उन सबके पीछे एक पहचान है प्रभु की, हे जीव तेरे अंदर ही इस मन के मंदिर में वह परमात्मा बैठा है-

**मन मंदिर दिल द्वारिका,  
काया काशी जान।**

**दसवां द्वारा देहरा,  
तामें ज्योति पहचान॥**

मन मंदिर के अंदर की ज्योति की बात कही है उन्होंने, इस अस्थायी ज्योति की बात नहीं करी, जो रात को हुई तो बल्कि जला दिया; उन्होंने उस ज्योति की बात कही जो अजर, अमर, अविनाशी है, जिसका नाश नहीं होता, जो समाप्त नहीं होती है, हमारा शरीर चला जाएगा, शरीर समाप्त हो जाएगा; पर वो ज्योति हमेशा रहेगी। यही संतों की वाणी से समझ आता है। आपने देखा होगा कि सावन मास में हम भगवान शिव को जल चढ़ाते हैं, बेल-पत्री चढ़ाते हैं, पूरा महीना

भगवान शिव को ठंडा पानी, बेल-पत्री, कोई दही लपेटा है, कोई दूध चढ़ाता है, तरह-तरह से हम पूजा करते रहते हैं, प्रभु को खुश करने के लिए; भगवान को महामृत्युंजय कहा, हम अपनी क्रियायों के द्वारा भगवान को प्रसन्न करने के लिए सब कुछ करते हैं; लेकिन रामचरित मानस में भगवान राम स्वयं क्या कहते हैं-

**महामंत्र जोइ जपत महेसू।  
कासी मुकुति हेतु उपदेसू।**

उस महामंत्र को जो जपता है, वह मुक्त हो जाता है। जो हम बाहर कर रहे हैं, वह हमारे अंदर भी हो रहा है; यही चीज़ समझने की है। जिस जल को हम बाहर चढ़ाते हैं, वह जल हमारे अंदर भी चढ़ रहा है, जिस नाम के सुमिरन के लिए हम बाहर चर्चा करते हैं, वह नाम सुमिरन हमारे अंदर भी हो रहा है। इसीलिए तो 21600 बार हम सांस लेते हैं, हर सांस में नाम का सुमिरन है। पर ज्ञानी उसको जानता है और जो नहीं जानता, वो इन सांसों को व्यर्थ गंवाता है।

द्वार है। अगर हम अब भी नहीं समझेंगे, तो कब समझेंगे। राजा जनक को एक स्वप्न आता है कि जब वे आखेट के लिए जंगल में जाते हैं, तो वे अपने सहयोगियों से बिछुड़ जाते हैं, जब बिछुड़ते हैं, तो भूख से व्याकुल हो जाते हैं। भटकते-भटकते एक झोपड़ी के पास पहुँचते हैं, वहाँ एक बुढ़िया माई रहती थी। उससे खाने के लिए मांगा, तो उसने कहा कि ये दाल-चावल ले लो और स्वयं बनाकर खा लो। बुढ़िया माई से दाल-चावल लेकर किसी तरह खिचड़ी बनाते हैं, जैसे ही खिचड़ी को ठंडी करने के लिए पत्तों पर डालते हैं, वैसे ही उसको लड़ते हुए दो बैल रैंद देते हैं। राजा जनक भूख से व्याकुल थे, उनकी आँखों से आंसू आने लग जाते हैं, वे रोने लग जाते हैं। रोते-रोते ही उनकी नींद खुल जाती है, तकिया गीला हो गया था। था तो वह स्वप्न ही है, लेकिन उस भयानक दुःख के कारण आंसू वास्तविक रूप से निकल पड़े थे। तो वे कहते हैं कि यह क्या है! मैं तो अपने आलीशान महल में पलंग पर सो रहा था, ये आंसू क्यों हैं? फिर उनके अन्दर एक प्रश्न

जाते हैं, जैसे कि ध्रुव और प्रह्लाद को बचपन में अध्यात्म की प्राप्ति हुई, वे समझ गए कि मैं किस लक्ष्य से आया हूं, मेरा जन्म किस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हुआ है, वह देश क्या है?

**बड़े भाग मानुष तन पावा।  
सुर दुर्लभ सदग्रंथन्हि गावा॥  
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा।  
पाय न जेहि परलोक संवारा॥**

हमें बार-बार सत्संग में सुनाया जाता है, यह पहली बार नहीं सुन रहे हम लोग कि यह मनुष्य शरीर साधन का धाम और मोक्ष का

**इसीलिए तो 21600 बार हम सांस लेते हैं, हर सांस में नाम का सुमिरन है। पर ज्ञानी उसको जानता है और जो नहीं जानता, वो इन सांसों को व्यर्थ गंवाता है।**

उत्पन्न हो जाता है कि मैंने जो स्वप्न देखा था, वह सत्य था या यह सत्य है, जो मैं अब खुली आँखों से देख रहा हूँ। आजकल तो स्वप्न भी आते हैं, स्वप्न भी देखते हैं; लेकिन सुबह फिर इतनी माया मोह में फंस जाते हैं कि वह स्वप्न भी भूल जाते हैं। लेकिन राजा जनक को अपनी स्वप्न अवस्था और जागृत अवस्था देखकर भ्रम हो जाता है कि जो मैं स्वप्न में देख रहा था, वह सत्य है या अब मैं राजमहल पर पलंग में सोया हूँ, यह सत्य है। उन्हें एक चेतना मिलती है कि ढूँढ़ और राजा जनक ढूँढ़ने लग जाते हैं। राजा ने बहुत

बड़ी सभा बुलाई, बड़े-बड़े विद्वान बुलाए। घोषणा की गई कि जो इस प्रश्न का उत्तर जो देगा, वह मेरा गुरु होगा। प्रश्न क्या था कि वे स्वप्न सत्य था या यह जागृत अवस्था सत्य है। सभा में आये विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से उत्तर दिये, बहुत बड़ी सभा थी, किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा; लेकिन राजा को उनके उत्तर से संतुष्टि नहीं हुई। जब अष्टावक्र जी सभा में आते हैं, तो अष्टावक्र जी का टेढ़ा-मेढ़ा शरीर देखकर सभी सभासद और विद्वान हंसने लगे कि यह टेढ़ा-मेढ़ा व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर क्या देगा? किन्तु अष्टावक्र जी ने कहा-राजन, ऐसी सभा आपने बुलाई है, जिन्हें सिर्फ चमड़ी का ज्ञान है। हम बड़ी आसानी से कह देते हैं कि वह गोरा है, वह काला है, वह नाटा है, वह लंबा है, बहुत तरह के नुक्स निकालते हैं; लेकिन अष्टावक्र जी का शरीर बाहर से कैसा भी था, पर अंदर से वे आत्मज्ञानी थे। वे राजा को उसके प्रश्न का उत्तर देते हुए बोले- राजन! ना वह सत्य था और ना यह सत्य है। ना तो वह स्वप्न सत्य था और ना यह जो तुम राजमहल में पलंग पर लेते हुए थे। यह भी सत्य नहीं है, वह भी सत्य नहीं है, तो फिर सत्य क्या है? राजा की जिज्ञासा और बढ़ जाती है। फिर सत्य क्या है? अष्टावक्र जी कहते हैं कि राजन! जो इन दोनों अवस्थाओं का साक्षी आत्मा है, वही सत्य है। तब अष्टावक्र जी ने राजा जनक को अध्यात्म ज्ञान का व्यावहारिक बोध कराया।

# GOD'S NAME IS THE ONLY SUPPORT IN KALIYUGA

SHRI HANS JI MAHARAJ

Dear Premies, when someone remembers the Holy Name of God, all his troubles and problems get solved. When a disciple does this for a long time, he gains many supernatural powers. All four Vedas talk about the glory of Holy Name. In Kaliyuga Yoga and other practices are difficult to perform so Holy Name is the recommended spiritual practice. In Ramcharit Manas, Saint Tulsidas says:

**"Holy Name gives salvation in Kaliyuga,**

**By constantly remembering it, one crosses the ocean of life and death"**

Kaliyuga is like an ocean of sin, and man's mind is like a fish in it. But by remembering Holy Name, this ocean dries up. Man thinks that he is making great progress but with this progress he is loosing peace. This is so because people are disconnected from their spiritual roots. They don't know the difference between good, bad and lack of Karma.

If you don't understand the law of Karma then you are bound to remain unhappy. Life is then like a Bull who works in the farm during the day and thinks that it has travelled great distance, only to find itself in the same stable at night. Similarly, as man searches of happiness, he finds himself unhappy and unsatisfied.

Everyone wants peace but no one has it. America lost 4 lakh soldiers in the Korea war. If we assume that half of them were married then that means that war resulted in 2 lakh widows and approximately 4

lakh kids without a father. There would be many more causalities from the Korean side. In the previous war an Atom bomb had been dropped on Japan. These massive stockpiles of weapons are created to kill animals or human?

Great minds today are limiting themselves to thoughts about destruction, money and food. We have MP Shri Narayan Singh Ji here. With him Babu Rajendra Prasad also learnt divine spiritual practices from us. During the teachings, Babu Rajendra Prasad said that although he had recited some spiritual books over 6 times, it was only now that he could understand the intricacies of it. Later he became a minister. I went to meet him and he said that he has so many tasks to do that he doesn't get time to perform meditation. I didn't say anything but returned right away. I now want to task what keeps him so busy? – worldly chores and tasks. When you don't get time during your life then how will you remember God at the last moment of your life?

When there is Ram Rajya, I will be very happy. People will live in peace, there will be spiritual discourses on many streets and parks, and people will perform their duties. But this will happen when we change our



conduct and behavior to follow Ram. When disciples remembers God and calls upon him then God comes to earth in an avatar. When Prahlada performed bhakti then God came in the Narsingh avatar. So perform bhakti before you try to bring Ram Rajya. When you do bhakti, God will come in some avatar. At the time of death, everything is left behind, then what will you take with yourself?

Mahadev lives on cremation grounds. He smears ash on his body and wears a garland of snakes on his neck. In spite of these, he is worshipped as a God. This is so because he used to recite that Holy Name of God which is called True Name. Parvati Ji also lives with him on cremation grounds. Unlike her, women today spend excessive efforts on makeup and beauty. And men on trousers and hats

etc.

**"All our holy books and Saints agree,  
Greatest boon is to develop love for Holy Name,  
So remember it with priority over other tasks"**

Reciting the Holy Name is the best karma. With this, the body will become useful, soul will be at peace and you will cross the cycle of life and death by achieving salvation. This is not achieved through mere theoretical understanding. Only when you constantly remember Holy Name and see the Divine Light during your life, then your soul will merge with that light at the time of death. Lord Krishna says that my abode is such which is not illuminated by Sun or Moon but it is self-illuminated. Upon reaching it, a being doesn't return to this earth. So we should strive to achieve that during our lifetime.

After going through eighty four lakhs life forms, one gets human birth,

Let us remember the Holy Name as the final day is nearing

Lord Kabir says:

**"You remember God when in trouble,**

**In happiness you forget Him.**

**If you remember Him in happiness,**

**There is no room for any trouble!"**

**"In happiness you didn't remember Him,**

**In troubles you rely on Him,**

**Who should answer such a disciple's prayers?"**

It is because of accumulated sins from previous lives that people don't come to spiritual discourses. Even if they come,

spiritual talks and lessons will not interest them. This is just like when one is under high fever, he will not like milk. Similarly people are high on materialism. You may not like my words but just like bitter medicines, which heal sick rapidly, my words are intended to hit you, so that you wake up. So go to Saints, offer them your highest respect and perform service. Then ask them about Holy Name which being remembered when inside their mother's womb. This great mantra can only be learnt from Saints. Knowing and practicing it will transform our lives. Believe my words only if you find them true, but don't postpone a good thing to tomorrow. When Lord Ram sent Lakshman to Ravan to get his life's lessons, then Ravan said that a good thought should be followed with speedy action without delays. He said that he wanted to turn salty water of oceans into sweet taste. It was just a matter of passing an order. But he never did it. He also wanted to build a staircase to heaven. Again he had to just pass an order for this, but he delayed this too. When his sister Suparnakha told him that two men and a beautiful woman have arrived in Dandak forest, he wanted to make this woman his wife immediately. He went to Marich and made him run in the forest in the form of a golden deer and kidnapped Janaki. Marich had tried to convince him against this, and so did Mandodri and Vibhishan but he didn't listen to them. He said that as a result of his actions his last moment had come. He lost all his sons and family in the war.

You should try to find that true Name and Light of God. Saints and great teachers can share this knowledge with you. The glory of spiritual discourses is great. Our great Rishis, Sanak, Sananadan, Sanatan and Sanat Kumar let go of samadhi (spiritual absorption) and instead chose to spread spiritual teachings. There is great benefit even if you listen to it accidentally. There used to live a dacoit who told his son to never hear any Satsang. He told his son to close his ears with his fingers should he hear it accidentally. The son was passing from a street and heard a few sentences of Satsang – he heard that Devas don't blink and their bodies don't create a shadow. He had heard just this much and quickly closed his ears. He then stole an expensive necklace that belonged to the Queen and then buried it in the forest. Queen made a fuss about her stolen necklace in the morning and stopped eating any food until it is found. The king called all his men and gave them strict instructions to find the necklace. His men looked all over and in the end found the son sleeping in the forest. They arrested him and took him to the King. The men beat him up to find the details about the necklace but he didn't reveal anything. That night, the queen dressed up as Devi Durga and went to his jail cell. She asked him to share the location of the necklace. The son saw her shadow and knew that the queen was trying to fool her. He said that he was not a thief. The queen believed her and set him free. So even a few lines of spiritual discourse saved his life.

# श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान का महत्व

**भा** रतीय सनातन संस्कृति जीवन के चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को लक्ष्य मानती है। इनमें ऋण का बोध अत्यंत महत्वपूर्ण है। जन्म लेते ही मनुष्य पर देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण लग जाता है। इनमें से पितृ ऋण का परिमार्जन

को तृप्त करना, उनकी संतुष्टि हेतु शास्त्रोक्त प्रक्रिया का पालन करना। इसके लिए जल, तिल, कुश आदि द्वारा पितरों को जलदान करना ही तर्पण कहलाता है। इसके द्वारा यह मान्यता है कि पितर संतुष्ट होते हैं और श्राद्ध कर्ता को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। भारतीय



अपने मृत स्वजनों यानी पितरों के श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान के माध्यम से होता है। यह न केवल आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा है, बल्कि इसके पीछे वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष भी छिपा है। श्राद्ध और तर्पण की सनातन अवधारणा यह है कि इसके माध्यम से पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए शास्त्रोक्त प्रक्रियाओं का संपादन किया जाता है। 'श्राद्ध' शब्द श्रद्धा से बना है, जिसका अर्थ है आस्था और विश्वास से किया गया कार्य। यह केवल एक कर्मकांड नहीं, बल्कि जीवात्मा के प्रति कृतज्ञता और उत्तरदायित्व का भाव है। श्राद्ध के माध्यम से हम अपने पूर्वजों व मृत स्वजनों की स्मृति को अक्षुण्ण रखते हैं और उनके प्रति अपने नैतिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए अपना श्रद्धा भाव प्रदर्शित करते हैं। तर्पण का अर्थ होता है- अपने पितरों

सनातन संस्कृति में श्राद्ध, तर्पण एवं पिंडदान एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना गया है। यह केवल एक कर्मकांड नहीं, अपितु आत्मा की शांति, पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता और पारिवारिक स्थिरता का वैज्ञानिक व आध्यात्मिक आधार है।

हर वर्ष पितृपक्ष (भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक) में अपने मृत स्वजनों के तर्पण, पिंडदान और श्राद्ध-कर्म संस्कारों का आयोजन होता है, जो जीवितों और मृतकों के बीच एक अदृश्य लेकिन सजीव सेतु का कार्य करता है। श्राद्ध कर्म का त्याग कर देने से व्यक्ति आत्मिक ऋणों से विमुख हो जाता है। यह सामाजिक, मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से हानिकारक है। सनातन शास्त्रों में श्राद्ध की अनिवार्यता को विशेष रूप में रेखांकित किया गया है।

## यः पितृन् न समर्चयेत्, न तस्य फलमश्नुते।

यानी जो अपने पितरों का तर्पण नहीं करता, उसे अपने जीवन में शांति और समृद्धि नहीं मिलती। **श्राद्धं हि पितृणां प्रीणनं।** यानी श्राद्ध पितरों को प्रसन्न करने का साधन है। श्राद्ध, तर्पण व पिंडदान कोई रूढ़ि नहीं, बल्कि ऋषियों द्वारा निर्देशित गूढ़ विज्ञान है। यह आत्मा की गति, जीवन की शुद्धि और सामाजिक कर्तव्य का मिलन बिंदु है। इसे न निभाना आत्मिक ऋण बढ़ाने जैसा है। **स्वधया पितरः तृप्ताः, प्रीयन्ते मनसा अपि च।** यानी स्वधा से पितर तृप्त होते हैं, किंतु मन की श्रद्धा ही उन्हें अधिक प्रिय है।

आधुनिक विज्ञान भले किसी आत्मा की सत्ता को नहीं मानता, लेकिन क्वांटम थ्योरी और ऊर्जा संरक्षण सिद्धांत यह दर्शाते हैं कि कोई भी ऊर्जा नष्ट नहीं होती, केवल रूप बदलती है। जब हम विशेषतिथियों को विशेष कर्म करते हैं, तब वह ऊर्जा संतुलन में सहायक होती है। इतना ही नहीं, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक लाभ की दृष्टि से भी श्राद्ध का आयोजन बहुत महत्वपूर्ण कृत्य है। श्राद्ध एक प्रकार से परिवार के बुजुर्गों के सम्मान व मृत स्वजनों के स्मरण का पर्व है। इससे युवाओं में संस्कार, कृतज्ञता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जागृत होती है। कुछ लोग अपने आपको अति आधुनिक विचारधारा का पोषक मानते हुए श्राद्ध-तर्पण व पिंडदान को रूढिवादी सोच मानते हैं और इसका विरोध भी करते हैं। वे इसे अंधविश्वास मानकर इसके त्याग की प्रवृत्ति का प्रचार-प्रसार भी करते देखे जाते हैं। लेकिन ऐसी प्रवृत्ति लोगों को न केवल अपना पितृऋण उतारने से विमुख करती है, बल्कि समाज में मूल्यहीनता को भी जन्म देती है। वेदों में श्राद्धकर्म को 'ऋण' से मुक्ति दिलाने वाले अनुष्ठान के रूप में बताया गया है। देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण। पितृ ऋण से मुक्त होने का एकमात्र साधन श्राद्ध और तर्पण है।

मान्यता है कि श्राद्ध करने के अनेक लाभ होते हैं। सबसे पहला लाभ आध्यात्मिक होता है। इससे पूर्वजों की आत्मा को शांति मिलती है। उनका आशीर्वाद मिलने से वंशजों की वृद्धि और समृद्धि उपलब्ध होती है। परिवार में शांति, समृद्धि आती है व संतान संबंधी बाधाएं भी समाप्त होती हैं। इतना

ही नहीं, इससे अनेक मनोवैज्ञानिक लाभ भी मिलते हैं। तर्पण और पिंडदान केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, ये हमारे आत्मिक, सामाजिक और पारिवारिक कर्तव्यों की अभिव्यक्ति हैं। सनातन संस्कृति में यह परंपरा अत्यंत गूढ़ और व्यवस्थित रूप में संरक्षित है। पितृ ऋण का यह भाव हमें यह सिखाता है कि हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे पूर्वजों के ही कारण है, अतः उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन हमारी धर्मिक जिम्मेदारी है। श्राद्ध और तर्पण का आध्यात्मिक पक्ष वेदों में कहा गया है- **पितृणाम् प्रीणनार्थं श्राद्धं कुर्यात् श्रद्धया।** अर्थात् श्राद्ध का आयोजन पूरी श्रद्धा और विधिपूर्वक किया जाना चाहिए ताकि पितृगण प्रसन्न हों। ऐसा माना जाता है कि श्राद्ध के समय पितरों की आत्माएं सूक्ष्म रूप में पृथ्वी पर आती हैं और अपने वंशजों द्वारा किए गए तर्पण, अन्नदान और पूजा को ग्रहण करती हैं। इससे उनकी आत्मा को शांति मिलती है और वे अपने वंशजों को आशीर्वाद देते हैं।

रूप से मृत आत्मा को नया 'भौतिक शरीर' प्रदान करता है ताकि वह अपने कर्मफल की यात्रा के अगले चरण में जा सके। श्राद्ध एक ऐसा विषय है जो भावनात्मक, मानसिक, सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर हमारे जीवन से जुड़ा है, और इसका महत्व केवल 'वैज्ञानिक प्रयोग' से नहीं मापा जा सकता। संतों और ऋषियों की दृष्टि में श्राद्ध आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुषों ने भी श्राद्ध को अत्यंत आवश्यक बताया है। इनका कहना था कि पूर्वजों की कृपा के बिना जीवन में स्थायित्व संभव नहीं। 'पितृयज्ञ' को वेदों में पांच महायज्ञों में स्थान दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह केवल एक कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्मिक उत्थान की सीढ़ी है।

आज जब हम आधुनिकता की दौड़ में परंपराओं से कटते जा रहे हैं, श्राद्ध जैसे कर्म हमारे लिए आत्मिक जड़ों से जुड़ने का माध्यम हैं। यह केवल पूर्वजों के लिए नहीं, स्वयं हमारे मन और परिवार की शुद्धि का मार्ग है। जो पीढ़ी अपने पितरों को स्मरण नहीं करती, वह अपने ही वंशजों से विस्मृत हो जाती है। अतः श्राद्ध केवल धर्म नहीं, चेतना है- जो अतीत से वर्तमान और भविष्य को जोड़ती है। ■

# दशरथ नंदन राम का दशानन रावण पर जीत का प्रतीक पर्व विजय दशमी

**भा**रतीय संस्कृति और सनातन परंपरा में पर्व केवल अवकाश या उत्सव के दिन नहीं, अपितु वे गहन आध्यात्मिक, सामाजिक और दार्शनिक संदेशों के जीवंत प्रतीक होते हैं। इन पर्वों की श्रृंखला में 'विजयदशमी', जिसे सामान्यतः 'दशहरा' के नाम से जाना जाता है, एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका शाब्दिक अर्थ है- 'दसवीं तिथि को प्राप्त विजय'। यह पर्व आश्चिन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है और यह अपने भीतर केवल

एक पौराणिक कथा ही नहीं, अपितु मानवता के लिए एक शाश्वत मार्गदर्शन भी समेटे हुए है। यह पर्व मुख्य रूप से दो महान विजयों का स्मरण कराता है। पहली, माँ दुर्गा द्वारा महिषासुर नामक असुर का वध, और दूसरी,



विजय-दशमी, 2 अक्टूबर पर विशेष

जो सर्वाधिक प्रचलित है, दशरथ नंदन भगवान श्री राम द्वारा लंका के अहंकारी राजा दशानन रावण का संहार। आलेख का केंद्रबिंदु इसी दूसरी विजय पर है, जो केवल दो व्यक्तियों या दो सेनाओं का युद्ध नहीं, बल्कि दो विचारधाराओं, दो जीवन-दर्शनों और दो चरित्रों का महासंग्राम था। यह धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर, न्याय की अन्याय पर, और सबसे महत्वपूर्ण, मर्यादा की अहंकार पर विजय का प्रतीक है। आज के इस आधुनिक युग में, जब संपूर्ण विश्व नैतिकता और चारित्रिक चुनौतियों से जूँझ रहा है, विजयदशमी का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक और आवश्यक हो गया है।

विजयदशमी के मर्म को समझने के लिए इसके दो प्रमुख पात्रों राम और रावण के चरित्रों का प्रतीकात्मक विश्लेषण

अनिवार्य है। वे केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि मानवीय गुणों और अवगुणों के चरम उदाहरण हैं। दशरथ नंदन राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं जिनका चरित्र भारतीय चेतना का आदर्श है। उन्हें 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता है, जिसका अर्थ है-मर्यादाओं का पालन करने वालों में सर्वश्रेष्ठ। उनका जीवन त्याग, संयम, करुणा, सत्य और धर्म का एक महाकाव्य है। क्योंकि उनका प्रत्येक कार्य धर्म से प्रेरित है। पिता के वचन की रक्षा के लिए चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार करना, उनके मर्यादा

पालन और कर्तव्यपरायणता की पराकाष्ठा है। वे चाहते तो अयोध्या के सिंहासन पर अपना अधिकार जता सकते थे, परंतु उन्होंने धर्म और अपने पिता के वचन को प्राथमिकता दी। उनका चरित्र संयम का अप्रतिम

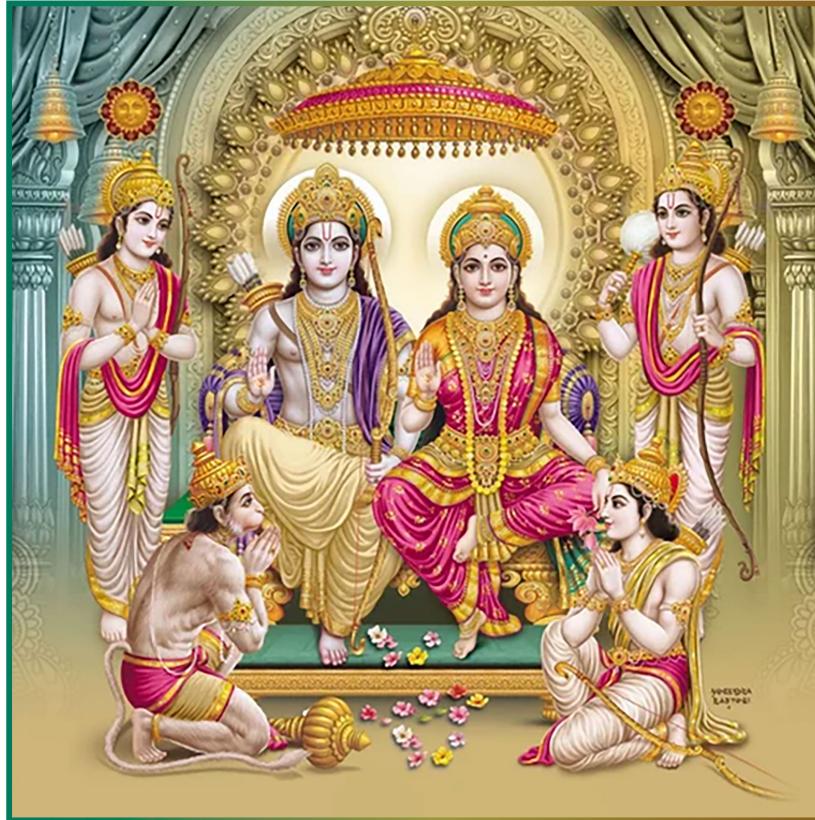
उदाहरण है। चाहे राज्याभिषेक का उल्लास हो या वनवास का कष्ट, वे सदैव सम्भाव में रहते हैं। पत्नी सीता के हरण के बाद भले ही वे विलाप करते देखे जाते हैं, परंतु फिर भी वे अपना विवेक और संयम नहीं खोते। वे क्रोध में आकर कोई अनैतिक कार्य नहीं करते, बल्कि धर्म और नीति के अनुसार ही अपनी सेना का संगठन करते हैं। उनका युद्ध केवल सीता को वापस लाने के लिए नहीं था। यह एक स्त्री के सम्मान की रक्षा, एक अपहरणकर्ता को दंडित करने और समाज में धर्म की पुनर्स्थापना का युद्ध था। उन्होंने शबरी के जूठे बेर खाकर सामाजिक समरसता का, निषादराज को गले लगाकर मित्रता का, और सुग्रीव की सहायता करके शरणागत की रक्षा का आदर्श प्रस्तुत किया। वे एक

आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भाई और आदर्श राजा हैं। जबकि दूसरी तरफ दशानन रावण बहुत अहंकारी था और उसके ज्ञान का विरोधाभासी चरित्र अत्यंत जटिल और बहुआयामी था। वह कोई साधारण खलनायक नहीं था। वह प्रकांड विद्वान्, वेदों का ज्ञाता, भगवान् शिव का अनन्य भक्त और एक कुशल शासक था। उसकी लंका सोने की थी, जो भौतिक समृद्धि का प्रतीक है। परंतु, अपार ज्ञान और शक्ति के बावजूद उसका पतन हुआ। क्यों? क्योंकि उसके चरित्र में कुछ ऐसे मौलिक दोष थे, जो उसके समस्त गुणों पर भारी पड़ गए। रावण के पतन का मूल कारण उसका अहंकार था। उसे अपनी शक्ति, अपनी विद्वता और अपनी समृद्धि का इतना घमंड था कि वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा। उसका ‘दशानन’ होना इस बात का प्रतीक है कि उसकी दस ईंद्रियाँ (पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ) उसके वश में नहीं थीं, बल्कि वे काम-वासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि से ग्रस्त थीं। उसके दस सिर इन्हीं दस दुरुणों के प्रतीक माने जा सकते हैं। जहाँ राम मर्यादा के प्रतीक हैं, वहीं रावण अमर्यादित आचरण का। उसने पराई स्त्री सीता का हरण किया, जो उसके चरित्र का सबसे बड़ा कलंक था। उसने विभीषण जैसे नीतिवान् भाई का तिरस्कार किया, जो यह दर्शाता है कि अहंकार सत्य और सलाह को स्वीकार नहीं कर सकता। रावण ने अपनी शक्तियों का उपयोग लोक कल्याण के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को भयभीत करने, देवताओं को बंदी बनाने और अपनी इच्छाओं को जबरन पूरा करने के लिए किया। जब ज्ञान और शक्ति पर अहंकार हावी हो जाता है, तो वह विनाश का कारण बनता है। दशानन रावण इसी का ज्वलंत उदाहरण है।

इस प्रकार, राम और रावण का युद्ध वास्तव में मानवीय

चेतना के भीतर चलने वाले शाश्वत द्वंद्व का प्रतीक है। यह संयम और वासना, विनम्रता और अहंकार, धर्म और अधर्म के बीच का संघर्ष है। राम की रावण पर विजय को केवल एक भौतिक या सैन्य विजय के रूप में देखना इसके अर्थ को सीमित करना है। इस विजय के कई गहरे और आध्यात्मिक आयाम हैं।

विजयदशमी का पर्व हमें संदेश देता है कि सबसे बड़ा युद्ध स्वयं के भीतर बैठे रावण से होता है। हमारे भीतर के क्रोध, ईर्ष्या, लोभ, अहंकार और वासना ही हमारे असली शत्रु हैं। रावण का पुतला दहन केवल एक बाहरी अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह अपने भीतर की इन नकारात्मक प्रवृत्तियों को जलाने का संकल्प है। यह आत्म-निरीक्षण और आत्म-सुधार का पर्व है। जब तक व्यक्ति अपने आंतरिक रावण पर



विजय प्राप्त नहीं करता, तब तक बाहरी विजय निरर्थक है। यह विजय ‘धर्म’ की पुनर्स्थापना का प्रतीक है। ‘धर्म’ का अर्थ यहाँ केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक सद्भाव है। रावण का राज्य अधर्म पर आधारित था, जहाँ शक्ति ही सत्य थी। राम ने रावण का वध करके यह स्थापित किया कि अंतिम विजय सदैव धर्म और सत्य की ही होती है, भले ही मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हो। रावण के अंत के बाद रामराज्य की स्थापना हुई, जो एक आदर्श शासन-व्यवस्था का प्रतीक है। रामराज्य का अर्थ है एक ऐसा राज्य जहाँ कोई दुखी न हो। कहा भी है-

**दैहिक दैविक भौतिक तापा।**

**राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥**

जहाँ न्याय सर्वोपरि हो और जहाँ राजा प्रजा का सेवक हो। विजयदशमी हमें इसी आदर्श ‘रामराज्य’ की स्थापना के लिए प्रेरित करती है- व्यक्तिगत जीवन में भी और सामाजिक जीवन में भी। ■

# अध्यात्म ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है

त्रपतिशिवाजीमहाराजके गुरुस्वामी समर्थरामदासजीने अपने ग्रंथ दासबोध में अनेक प्रकार के ज्ञानों का उल्लेख करते हुए अध्यात्म ज्ञान को विशुद्ध ज्ञान बताया है। इसी अध्यात्म ज्ञान का उल्लेख करते हुए वे कहते हैं कि जब तक सच्चा और स्पष्ट ज्ञान न हो, तब तक और सब प्रकार के ज्ञान निष्फल होते हैं; क्योंकि उस सच्चे ज्ञान के बिना मन की चंचलता दूर नहीं होती। ज्ञान शब्द का उच्चारण करते ही भ्रम उत्पन्न होता है। इस पर लोग कह सकते हैं कि यह भ्रम कैसा और इसका रहस्य क्या है? अतः अब क्रम से यह विषय बतलाया जाता है। भूत, भविष्य और वर्तमान सबकी बातें मालूम होने को भी ज्ञान कहते हैं, पर वह वास्तविक ज्ञान नहीं है। बहुत कुछ विद्याध्ययन करना, संगीत शास्त्र, वैद्यक और वेदों का अध्ययन करना भी ज्ञान नहीं है। अनेक प्रकार के व्यवसायों, दीक्षाओं और परीक्षाओं का ज्ञान भी ज्ञान नहीं है। अनेक प्रकार की

स्त्रियों, पुरुषों और नरों की परीक्षा भी ज्ञान नहीं है। अनेक प्रकार के घोड़ों, हाथियों और जंगली जानवरों की परीक्षा भी ज्ञान नहीं है। अनेक प्रकार के पशुओं, पक्षियों, भूतों, यानों, वस्त्रों, शस्त्रों, धातुओं, सिक्कों, रत्नों, पाषाणों, काष्ठों, भूमियों, जलों, सतेज या अग्निमय पदार्थों, रसों, बीजों, अंकुरों, पुष्पों, फलों, वल्लियों, दुःखों, रोगों, चिन्हों, मन्त्रों, यन्त्रों, मूर्तियों, क्षेत्रों, ग्रहों, पात्रों, भविष्य में होने वाली बातों, समयों, तर्कों, अनुमानों और निश्चयों आदि की परीक्षा या ज्ञान भी ज्ञान नहीं है। अनेक प्रकार की विद्याओं, कलाओं, चातुर्यों, शब्दों, अर्थों, भाषाओं, स्वरों, वर्णों, लेखों, मतों, ज्ञानों, वृत्तियों, रूपों, रसनाओं, सुगन्धियों, सृष्टियों, विस्तारों, पदार्थों या भूमितियों आदि की परीक्षा भी ज्ञान नहीं है।

परिमित भाषण करना, किसी बात का तत्काल उत्तर देना अथवा शीघ्र कविता करना भी ज्ञान नहीं है। नेत्रों के संकेत से भाषण करना, भेद की बात जानना भी ज्ञान नहीं है, काव्य-कौशल, संगीत-कला, गीत-प्रबन्ध, नृत्य-कला और सभा चातुर्य भी ज्ञान नहीं है। वाग्विलास, मोहन-कला, रम्य और रसाल गायन-कला, हास्य-विनोद और काम-कला, अनेक



प्रकार के कौशल, चित्र-कला, अनेक प्रकार के बाजे बजाने की कला, इसी प्रकार की अनेक विचित्र कलाएं, चौसठ कलाएं इनके अतिरिक्त और भी दूसरी कलाएं, चौदह विद्याएं और सकल कलाएं आदि जानना भी ज्ञान नहीं है। चाहे कोई सभी कलाओं में प्रवीण हो और विद्या मात्र से परिपूर्ण हो, तो भी उसे केवल कौशल कहेंगे, वह कभी ज्ञान नहीं हो सकता।

ये सब बातें भी ज्ञान के समान ही जान पड़ती हैं, पर मुख्य ज्ञान कुछ और ही है। उस ज्ञान से प्रकृति का कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरे के मन की बात जान लेना भी ज्ञान ही समझा जाता है, पर यह आत्मज्ञान का लक्षण नहीं है। यदि कोई बहुत बड़ा महानुभाव मानस-पूजा करते-करते बीच में कुछ भूल गया और किसी ने उसे टोक दिया कि यहाँ तुमने भूल की

है, तो इस प्रकार मन की स्थिति जानने वालों को परम ज्ञाता कहते हैं। पर यह भी वह ज्ञान नहीं है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। अनेक प्रकार के ज्ञान हैं, जिनका पूरा-पूरा वर्णन नहीं हो सकता; पर जिस ज्ञान से सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति होती है, वह ज्ञान कुछ और ही है।

ज्ञान का वास्तविक अर्थ आत्मज्ञान है; जिस ज्ञान से मनुष्य स्वयं अपने आपको जान ले; वही सच्चा ज्ञान है। ईश्वर को जानना, सत्य का स्वरूप पहचानना और नित्य तथा अनित्य का विचार करना ही ज्ञान है। जिसके द्वारा इस दृश्य प्रकृति का अन्त हो जाता है, कोई पंचभौतिक वस्तु नहीं रह जाती है और द्वैतभाव का समूल नाश हो जाता है, उसी को ज्ञान कहते हैं। जो मन और बुद्धि के लिए अगोचर है, जिसके सामने तर्क नहीं ठहर सकता और जो उल्लेख तथा परा से भी परे है, वही ज्ञान है। जिसमें कुछ भी दृश्यमान नहीं है, जिसमें अहंब्रह्मास्मि का ज्ञान भी अज्ञान ही है और जो परम विमल तथा शुद्ध स्वरूप ज्ञान है, वही सच्चा ज्ञान है।

लोग सबकी साक्षी तुरीयावस्था को ज्ञान कहते हैं; पर उस अवस्था में होने वाला ज्ञान भी पदार्थ-ज्ञान है। दृश्य पदार्थ के ज्ञान को पदार्थ ज्ञान कहते हैं; पर अपने शुद्ध स्वरूप का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। जहाँ किसी पदार्थ का अस्तित्व ही नहीं है। ज्ञान वस्तुतः अद्वैत को कहते हैं जिसमें एक को छोड़कर और दूसरा कोई होता ही नहीं; और तुरीयावस्था प्रत्यक्ष द्वैत रूप है, इसलिए स्वतन्त्र और सदा बना रहने वाला शुद्ध ज्ञान इस तुरीय ज्ञान से भी भिन्न ही है। स्वयं अपने स्वरूप का सच्चा ज्ञान प्राप्त करना परम दुर्लभ ज्ञान है। यह ज्ञान आदि से अन्त तक स्वयंभू स्वरूप है। जिससे यह सब प्रकट होता है और जिसमें सब कुछ लीन होता है, उसी ज्ञान से बन्धन की भ्रान्ति दूर होती है। जिसके सामने सब मत-मतान्तर दब जाते हैं और जिसकी सहायता से सूक्ष्म विचार करने पर उन सब मत-मतान्तरों में एकता दिखाई पड़ती है, जो सब चर और अचर का मूल है, जो शुद्ध और निर्मल स्वरूप है, वही वेदान्त के मत से शुद्ध ज्ञान है। अपने मूल स्थान का अन्वेषण करने से अज्ञान सहज में नष्ट हो जाता है और यही मोक्ष देने वाला ब्रह्मज्ञान है। अपने को पहचान लेने से ही सर्वज्ञता प्राप्त हो जाती है और एक देशीयता का नाश होता है। यदि मन में हेतु रखकर विचार किया जाय कि मैं कौन हूँ, तो यह पता चल सकता है कि मैं देह से भिन्न स्वरूप हूँ।

सिद्ध, मुनि, महानुभाव सबका भीतरी भाव वही शुद्ध ज्ञान है और महादेव जी भी सदा उसी के सुख में मग्न रहते हैं। यही

ज्ञान, वेदों और शास्त्रों का सार है, गुरु-प्रतीति और आत्म-प्रतीति का विचार है और यह भक्तों को बड़े भाग्य से मिलता है। जिस ज्ञान की सहायता से साधु, सन्त और सज्जन, भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सब बातें जानते हैं, उससे भी बढ़कर गूढ़ यह आत्मज्ञान है। यह ज्ञान तीर्थ, व्रत, तप, दान, धूप्रपान “उलटे होकर जलती हुई आग के ऊपर लटकना और उसका धूआं पीना, पंचाग्नि या गोरांजन “ईश्वर के नाम पर अपने आप को जला देना” से भी वह प्राप्त नहीं होता। यह समस्त साधनों का फल और समस्त ज्ञान की चरम सीमा है और इससे संशयों का समूल नाश होता है। ज्ञान रूपी अग्नि के प्रकट होते ही दृश्य रूपी कूड़ा-करकट सब नष्ट हो जाता है और उसी के तदाकार हो जाने से भिन्नता का मूल ही नहीं रह जाता। जब यह समझ में आ जाता है कि यह संसार मिथ्या है, तब फिर उस संसार में मन नहीं लगता। उस समय संसार यद्यपि दृश्य रहता है, पर फिर भी उसका अभाव-सा जान पड़ता है; और इस प्रकार सहज में ही आत्म-निवेदन हो जाता है। यदि गुरु में तुम्हारी अनन्य भक्ति है, तो तुम्हें किस बात की चिन्ता है? तब तुम्हें अभक्त बनकर, अलग होकर नहीं रहना चाहिए। इसी भाव को दृढ़ करने के लिए सद्गुरु का भजन करना चाहिए। सद्गुरु का भजन करने से अवश्य ही शान्ति मिलती है। इसी का नाम आत्मज्ञान है, इसी से परम शान्ति मिलती है और संसार का भय तथा बन्धन समूल नष्ट हो जाता है। जो अपने शरीर को ही “मैं” समझता है, उसे आत्महत्या करने वाला समझना चाहिए। वह अपने देह के अभिमान के कारण अवश्य ही जन्म और मरण का दुःख भोगता रहता है।

तुम स्थूल, सूक्ष्म, कारण और महाकारण इन चारों प्रकार के देहों से अलग हो, जन्म-कर्म से भी अलग हो और सारी चराचर सृष्टि में अन्दर बाहर तुम्हीं भरे हुए हो। वास्तव में किसी के लिए कोई बन्धन नहीं है; सब लोग भ्रम में पड़कर भूले हुए हैं; क्योंकि इन लोगों ने देहाभिमान दृढ़ता पूर्वक धारण कर रखा है। तुम एकान्त में बैठकर अपने स्वरूप, ब्रह्म स्वरूप में विश्राम लो और इस प्रकार अपना परमार्थ दृढ़ करो। अखण्ड श्रवण और मनन करने से ही समाधान होता है और ब्रह्मज्ञान पूर्ण होने पर वैराग्य होता है। यदि तुम इन्द्रियों को स्वच्छन्द रूप से छोड़ दोगे, तो तुम्हारा कष्ट कभी दूर न होगा। जिस प्रकार मणि का त्याग करते ही राज्य मिलता है; उसी प्रकार विषयों से वैराग्य होने पर पूर्ण ज्ञान होता है। जो अविद्या को छोड़कर सुविद्या ग्रहण करता है, उसे शीघ्र ही परमात्मा मिलता है। ■

# प्रसन्नता है मन की शांत अवस्था

**म**नुष्य के अंदर दुःख, शोक, चिंता, भय या व्याकुलता आने के मुख्य रूप से दो ही कारण होते हैं। पहला, प्रिय या इच्छित वस्तु, परिस्थिति या व्यक्ति का वियोग हो जाना और दूसरा, अप्रिय या अनिष्ट वस्तु, परिस्थिति का संयोग या प्राप्ति का हो जाना। इन दोनों परिस्थितियों में कुछ व्यक्ति बहुत अधिक दुःखी या व्याकुल हो जाते हैं और मानसिक तनाव के कारण बीमार हो जाते हैं। परंतु कुछ व्यक्ति विपरीत या प्रतिकूल परिस्थिति में कम प्रभावित होते हैं या उससे जल्दी बाहर निकल कर अपने दैनिक क्रिया-कलापों में व्यस्त हो जाते हैं। वे जानते हैं कि अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां तो सभी के जीवन में आती-जाती रहती हैं। हमेशा एक-सी ही स्थिति नहीं रहती; क्योंकि प्रकृति में भी

लगातार परिवर्तन होता रहता है। इन दोनों प्रकार के व्यक्तियों के अलावा कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो काल्पनिक स्थिति का विचार करते रहने के कारण भयभीत या व्याकुल रहते हैं। जैसे, कहीं मुझे कोई बड़ी बीमारी न हो जाए, उस समय मेरा या मेरे परिवार का क्या होगा! या यदि उनके परिवार का कोई व्यक्ति गाड़ी से घर से बाहर गया है, तब वे यह सोच कर व्याकुल होते रहते हैं कि कहीं रास्ते में कुछ हो न जाए।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि जिस मनुष्य के व्यवहार या क्रिया-कलापों से दूसरे मनुष्य उद्विग्न या व्याकुल नहीं होते, या वह स्वयं भी दूसरे मनुष्यों से उद्विग्न नहीं होता। जो सुख, दुःख, ईर्ष्या, भय और उद्विग्नता से रहित है, वह मनुष्य मुझे प्रिय है। अन्य शास्त्रों में भी तीन प्रकार के ताप

का जिक्र आता है। गीता में आता है, 'दुःखों की प्राप्ति होने पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में जो सर्वथा इच्छा रहित है, जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गए हैं, ऐसा व्यक्ति स्थिर बुद्धि कहा जाता है। इसलिए स्थिर बुद्धि वाला मनुष्य उपरोक्त तीनों प्रकार की परिस्थिति आने पर भी उसके मन में बहुत बड़ी हलचल नहीं होती, वह शांत रहता है। तब वह अपना कार्य विचारपूर्वक सावधानी के साथ करते हुए उस प्रतिकूल परिस्थिति से बहुत शीघ्र ही बाहर निकल जाता है।

यदि हमें अपना कार्य पूरा करने के बाद इच्छानुसार परिणाम प्राप्त नहीं हुआ, तब हमें व्याकुल होने के स्थान पर उसकी विफलता पर भलीभांति विचार करना चाहिए कि कहाँ पर हमसे कमी रह गई, उसका ध्यान रखते हुए

भविष्य में फिर प्रयास कर सकते हैं। इसी प्रकार हमारे प्रति दूसरों के व्यवहार और उनकी क्रियाओं पर हमारा वश नहीं है, तब हमें उनसे अपने मन में आने वाले काल्पनिक विचारों से भी अपने मन को व्याकुल नहीं करना चाहिए। जो हो चुका है, उससे सीख लेकर भविष्य के प्रति सावधान हो सकते हैं। वर्तमान में किए जाने वाले कर्मों को पूरे शांत मन से परिस्थिति के अनुरूप खुशी-खुशी करने का प्रयास करना चाहिए, इसी में हमारा कल्याण है। इसके अतिरिक्त दूसरों की उन्नति होने पर हमें उनसे ईर्ष्या का भाव रखकर अपने मन को मलिन व व्याकुल नहीं करना चाहिए। जितना हमारा मन शांत रहेगा, उतनी ही प्रसन्नता हम प्राप्त करेंगे। मन की स्थिरता आती है अध्यात्म ज्ञान की साधना से। ■



एक बार एक बादशाह वेश  
बदलकर राज्य में घूम रहा था।  
रास्ते में उसे भूख लगी तो एक जमींदार  
के कुएं पर पहुँचा। जमींदार ने उसे राहगीर  
समझ कर उसे कुछ खाने को

दिया और उसके घोड़े को पानी पिलाया।  
बादशाह बहुत खुश हुआ और उसे अपना  
रहस्य बताते हुए कहा कि मैं अमुक देश का  
बादशाह हूँ। कभी जरूरत पड़े तो मेरे पास  
आना। कुदरत का खेल ऐसा हुआ कि कुछ  
ही दिनों में उसे जरूरत पड़ी तो  
बादशाह की बात याद आई।  
सीधे राजमहल पहुँच गया।  
बादशाह उस समय नमाज पढ़ रहे थे। जमींदार ने देखा कि  
कैसे बादशाह ने नमाज पढ़ने के बाद हाथ ऊपर उठाकर  
भगवान से आशीष मांगी।

जब बादशाह उठा तो  
जमींदार उनसे मिला और  
फिर वापस जाने के लिए उठ  
खड़ा हुआ। बादशाह ने कहा,  
तुमने यह तो बताया ही नहीं  
कि तुम किसलिए आए थे।  
जमींदार ने कहा कि आया तो  
था मैं आपसे मदद मांगने, पर  
मैंने देखा कि आप भी मांग ही  
रहे हैं तो क्यों न मैं भी उससे  
ही मांगूँ जो सबकी मांग पूरी  
करने वाला है। भगवान ही  
एकमात्र सबका सहायक है।  
इसलिए उस भगवान से ही

मांगो, जो समस्त कामनाओं को पूर्ण करने  
वाला है, वही सबको देता है। वह ऐसा फल  
देने में सक्षम है, जो मनुष्य की कामनाओं  
और वासनाओं को दूर कर आप्तकाम करने  
वाला है। इस प्रसंग  
का आशय

यही है कि हमें संसार के लोगों का आश्रय  
छोड़कर उस परमपिता परमात्मा का ही  
आश्रय लेना चाहिए; क्योंकि वही सबका  
परमाश्रय है और उसी के आगे अपने हाथ  
आना। कुदरत का खेल ऐसा हुआ कि कुछ फैलाने चाहिए। ■

## मांगो उससे, जो सबको देता है

### दिल में ज्योति जल रही है

दिल में ज्योति जल रही है, मां सुहानी आप की।  
कर दे रोशन ऐसी ज्योति, मां नूरानी आप की॥ १॥  
हम अंधेरे में घिरे थे, ना उजाला मिल सका।  
जिन्दगी में रोशनी दी, मेहरबानी आप की॥  
दिल में ज्योति जल रही है, मां सुहानी आप की॥ २॥  
ज्योति के आगे पतंगों की तरह मैं मर मिटूँ।  
अब तो तेरे ही लिए है, जिन्दगानी दास की॥  
दिल में ज्योति जल रही है, मां सुहानी आप की॥ ३॥  
एक तूँ ही मां जगत में, कितनों की आशा है तूँ।  
अब तलक दासों ने तेरी, महिमा न जानी आप की॥  
दिल में ज्योति जल रही है, मां सुहानी आप की॥ ४॥  
तेरी रहमत से है पाया, हमने तेरे प्यार को।  
मेरे नयनों में बस जाए, मोहनी सूरत आप की॥  
दिल में ज्योति जल रही है, मां सुहानी आप की॥ ५॥

# परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्मदिवस पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह संपन्न आध्यात्मिक ज्ञान ही है हृदय परिवर्तन की धुरी-डॉ. माताश्री मंगला जी

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के पावन जन्मदिवस के सुअवसर पर हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में 26 व 27 जुलाई, 2025 को श्री हंसलोक आश्रम,

के लिए विशाल भोजनालय और रसोईघर की व्यवस्था की गयी। इसके साथ ही बिजली, पानी, शौचालय, स्नानघर, प्रवेश पत्र कार्यालय, वाहन एवं यातायात कार्यालय, सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष, सूचना एवं खोया-पाया केन्द्र, श्री हंसलोक

गये थे, जो सभी को सहज ही आकर्षित कर रहे थे। सभी मार्गों, भवनों और स्थानों को आवश्यकतानुसार वस्त्र, पुष्प और प्रकाश लड़ियों से सुसज्जित किया गया था। संपूर्ण आश्रम परिसर में स्थायी रूप से लगे ध्वनि विस्तारक यंत्र निरंतर भजनों की



परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के जन्मदिवस के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह को सम्बोधित करते हुए<sup>1</sup>  
डॉ. माताश्री मंगला जी एवं साथ में मंचासीन श्री महाराज जी

भाटी, नई दिल्ली में दो दिवसीय विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया गया जिसमें परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी एवं महात्मागण का सर्वधर्म ग्रन्थों के आधार पर प्रवचन हुआ। इस विशाल जनकल्याण समारोह की तैयारियां जुलाई माह के प्रथम सप्ताह से ही आरंभ हो गयी थीं। समारोह के लिए विशाल पंडाल तथा मंच के साथ आगंतुकों के आवासार्थ टैट तथा भोजन

सेवक पंजीकरण एवं सेवा वितरण शिविर, चिकित्सा शिविर, अग्नि शमन वाहन एवं अग्नि रक्षक दल आदि की भी व्यापक व्यवस्था की गयी।

श्री हंसलोक आश्रम के प्रवेश द्वार संख्या-1 से सामान्यजनों का प्रवेश रखा गया तथा प्रवेश द्वार संख्या-3 से मुख्य अतिथि एवं गणमान्यजनों का प्रवेश रखा गया। ये दोनों ही प्रवेश द्वार पत्र, पुष्प, वस्त्र और सुंदर बैनर से सुसज्जित किये

मधुर ध्वनि के माध्यम से सभी के कर्ण पुटों को आनंदित कर रहे थे। आश्रम के विशाल हाल में बने मुख्य मंच को वस्त्र, पुष्प और एलईडी से सुसज्जित किया गया था तथा उसके दाहिनी ओर बने मंच को भी वस्त्र, पुष्प और श्री गणेश जी की सुन्दर छवि से सजाया गया था। इस मंच पर विराजमान महात्मा/बाईंगण के माध्यम से सर्वधर्म ग्रन्थों के आधार पर आध्यात्मिक विचार प्रस्तुत किये गये। मंच के बाईं ओर के मंच

को भी वस्त्र, पुष्प और माताश्री सरस्वती की दिव्य छवि से सुसज्जित किया गया था। इस मंच पर भजन गायकों द्वारा आत्म जागरण के भजन प्रस्तुत किये गए। संपूर्ण परिसर में विभिन्न सुंदर रंग-बिरंगी मार्गदर्शक पट्टिकाएं टांगी गई थीं ताकि किसी को कहीं जाने-जाने में असुविधा न हो। मुख्य मंच के दाहिनी ओर विशिष्ट अतिथियों के बैठने के लिए सुविधाजनक सोफा और कुर्सियां लगाई गई थीं तथा गर्मी से बचने के लिए पर्याप्त संख्या में कूलरों

श्रद्धालुओं एवं जनसामान्य के बैठने के लिए भी आरामदायक कुर्सियां लगाई गयी थीं।

श्रद्धालुओं का आगमन 24 जुलाई की शाम से शुरू हो गया था। इसलिए भंडारा भी शुरू कर दिया गया था। 25 जुलाई की प्रभात सदगुरु महाराज की आरती-वंदना और ध्यान-सुमिरण के साथ आरंभ हुई। तत्पश्चात ध्वनि विस्तारक यंत्र के माध्यम से वेदमंत्रों की दिव्य ध्वनि संपूर्ण आश्रम परिसर को आनंदित करने लगी। भारत

प्रवेश पत्र प्रदान किया जा रहा था। इस सेवा में श्री हंसलोक सेवक, सेविकाएं तथा जूनियर सेवक दिन-रात सेवा में संलग्न थे। संपूर्ण समारोह परिसर में स्थान-स्थान पर आवश्यकतानुसार पीने के पानी, शौचालय एवं स्नानघर की व्यवस्था की गयी थी। श्री हंसलोक सेवक निरन्तर समारोह में पथरे श्रद्धालुओं एवं प्रेमीभक्तों का मार्गदर्शन कर रहे थे। जो भी यहां पहुँच रहा था, वह खुशी और आनंद से सरावोर था, हो भी क्यों न, वह अपने इष्टदेव के परमपावन जन्मदिवस



**परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के जन्मदिवस के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में उपस्थित विशाल जनसमूह डॉ. माताश्री मंगला जी का प्रवचन श्रवण करते हुए**

की व्यवस्था की गयी थी। संस्था के स्वयं सेवक जहां उन्हें समुचित स्थान पर बैठाने में सहयोग कर रहे थे, वहीं समय-समय पर पीने के पानी को भी उपलब्ध करा रहे थे। मुख्य मंच की बाई और आमंत्रित महानुभावों के बैठने की व्यवस्था की गयी थी, जहां सुविधाजनक सोफा और कुर्सियों की व्यवस्था के साथ पीने के पानी की भी उपलब्धता सुनिश्चित की गयी थी। गर्मी से बचाव के लिए पर्याप्त संख्या में कूलर और पंखों की व्यवस्था की गयी थी। पंडाल में

के कोने-कोने से प्रेमीभक्तों के समूह कार, बस, रेल के माध्यम से लगातार आश्रम परिसर की ओर बढ़ रहे थे। दोपहर तक आश्रम परिसर में प्रेमीभक्तों एवं महात्मा/बाईंगण की चहल-पहल चहुँ दिशि दृष्टिगोचर होने लगी। श्री हंसलोक सेवक, सेविकाएं तथा जूनियर सेवक भी पहुँचकर सौंपी गयी सेवाओं में संलग्न होते जा रहे थे। प्रेमीभक्तों का प्रवेश द्वारा संख्या 1 से था। आश्रम परिसर में प्रवेश करते ही उन्हें कम्प्यूटराइज्ड चित्र सहित

के समारोह में शामिल होने जो आया था। दिव्य विभूतियों के दर्शन, प्रवचन और सानिध्य का सुखद अहसास उनके अंतर्मन को आह्वादित कर रहा था। सर्वत्र भक्त समाज हर्षित और आनंदित नजर आ रहा था। सभी एक-दूसरे से मिलकर, महात्मा/बाईंगण के दर्शन कर और आश्रम परिसर के दिव्य वातावरण से अत्यधिक विनीत और मयादित नजर आ रहे थे।

सायं 4 बजे से श्री हंसलोक सेवक, सेविकाओं और जूनियर सेवकों की

मार्गदर्शन बैठक आयोजित की गयी जिसमें संगठन के प्रभारियों ने उन्हें समारोह से संबंधित सेवा कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी देने के साथ उन सेवाओं को संपादित करने के सरलतम तरीके बताये। इसी बीच परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला

हैं। उन्होंने कहा कि कोई कितना भी बड़ा कार्यक्रम हो, यदि भक्त के मन में सेवा का भाव हो और सभी एक-दूसरे का सम्मान और सहयोग करते हुए अपने कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वाह करें, तो उसे सफल बनाने में कोई कठिनाई नजर नहीं आती। इसलिए यह जो सेवा का अवसर मिला है,

खुशी के साथ ग्रहण किया। लोगों की भारी संख्या को देखते हुए होम्योपैथिक और ऐलोपैथिक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया था जिसमें विशिष्ट चिकित्सक रोगियों व जरूरतमंदों की जांच कर दवाइयों प्रदान कर रहे थे। आपात स्थिति के लिए चिकित्सा की 24 घंटे



परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के जन्मदिवस के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में उपस्थित महात्मागण एवं बाईंगण डॉ. माताश्री मंगला जी का प्रवचन श्रवण करते हुए

जी पदार्पण हुआ। सभी सेवक/सेविकाएं तथा जूनियर सेवक दिव्य विभूतियों को अपने बीच पाकर भाव विभोर हो उठे। सेवा के महत्व को प्रकाशित करने वाले एक भजन के पश्चात् जूनियर सेवकों ने ‘वह शक्ति दो दयानिधि, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।’ सामूहिक रूप से प्रार्थना का गायन किया जिसे सुनकर श्री महाराज जी और श्री माता जी बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद परमाराध्या डॉ. माताश्री मंगला जी का प्रेरणास्पद सम्बोधन हुआ। श्री माता जी ने सेवक/सेविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें बहुत खुशी हुई कि आप सभी सेवा के उद्देश्य से एक दिन पहले पहुँचे हो। यह और भी खुशी की बात है कि सभी अपने वरिष्ठजनों के निर्देशानुसार सौंपी गयी सेवाओं को संपादित कर रहे

इसका पूरा-पूरा लाभ उठाएं। तत्पश्चात् सभी को श्री महाराज जी एवं माताजी के दिव्य दर्शन का सुवावसर प्राप्त हुआ।

26 जुलाई की सुबह तक संपूर्ण आश्रम परिसर प्रेमीभक्तों एवं श्रद्धालुओं से भर चुका था। सभी स्थानों पर स्त्री-पुरुष और बच्चे दिखाई दे रहे थे। प्रातः सद्गुरु महाराज की आरती-वंदना के पश्चात् वेदमंत्रों एवं भजनों की मधुर ध्वनि संपूर्ण आश्रम परिसर को गुंजायमान कर रही थी। सेवक/सेविकाओं और कार्यकर्ताओं ने सभी स्थानों पर सेवा कार्यों को संभाल रखा था। चाय का स्टॉल सुबह 6 बजे से ही शुरू हो गया था जहां प्रेमीभक्तों चाय की चुस्कियां लेकर अपने आलस्य और थकान को दूर कर रहे थे। ठीक समय पर भंडारे में नाश्ता का आरंभ हो गया जिसे सभी ने

सुविधा उपलब्ध कराई गयी थी। इसीलिए दो एम्बूलेंस के साथ दिन-रात चिकित्सक और पैरामेडिकल स्टाफ सेवारत रहे।

सायंकाल ठीक समय पर जनकल्याण समारोह का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण और गुरु वंदना के बाद श्री सत्यवान जी और श्री श्याम जी ने संयुक्त रूप से “गुरु चरण कमल बलिहारी रे” गुरु महिमा से परिपूर्ण भजन की प्रस्तुति की। तत्पश्चात् श्री सूरज सनवाल ने सुंदर प्रेरक भजन प्रस्तुत किए। इसके बाद महात्मा गुरुआजानंद जी का उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने जीवन में अनुशासन को महत्वपूर्ण बताया। एक भजन हुआ, उसके बाद महात्मा हरिप्रियाबाई जी का उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने सद्गुरु महिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने सिखों के

प्रथम गुरु नानकदेव जी के समय का एक संस्मरण प्रस्तुत करते हुए गुरु आज्ञा के महत्व को समझाया। इसी बीच परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माताश्री मंगला जी का मंच पर पदार्पण हुआ। दिव्य विभूतियों को अपने बीच पाकर प्रेमीभक्त अतिउत्साह के साथ उनकी जय-जयकार करने लगे। सर्वत्र हर्षमय उत्साह और उमंग का वातावरण था। श्री सूरज सनवाल और कुमारी रशि ने एक-एक भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् परमपूज्य श्री भोले जी महाराज ने अपनी दिव्य

काल में समाज अत्यधिक गर्त की ओर जा रहा है, तात्कालिक लाभ, स्वार्थ और सुख की लालसा उसे पथभ्रष्ट कर रही है।

इसलिए समाज में संस्कार और संस्कृति नजर नहीं आ रही है; क्योंकि मानव अध्यात्म से विमुख होता जा रहा है। युवाओं को संबोधित करते हुए श्री माता जी ने कहा कि युवा, परिवार, समाज और राष्ट्र के भविष्य हैं। उन्हें अपने आपको शास्त्र सम्मत सद्मार्ग पर चलाते हुए जीवन को सुसंस्कारित, अनुशासित और मर्यादित बनाना चाहिए। तभी वे अपने परिवार,

शहनाई की मधुर ध्वनि के साथ 27 जुलाई की सुबह का शुभारंभ हुआ। वृद्धावन से पथरे शहनाई वादक अनेक तरह से राग-रागिनियों की मंगल ध्वनि शहनाई के माध्यम से प्रसारित कर रहे थे। आज परमपूज्य श्री भोले जी महाराज का परमपावन जन्म दिवस है, यह जानकर सभी प्रेमीभक्त अत्यन्त उछाह में थे। वे ब्रह्मबेला से ही स्नान-ध्यान कर दिव्य विभूतियों के सानिध्य के लिए आतुर थे। वर्षों से महात्मागण का सत्संग सुन कर जिनके हृदय में आत्मजिज्ञासा उत्पन्न



परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के जन्मदिवस के सुअवसर पर आयोजित विशाल जनकल्याण समारोह में उपस्थित विशाल जनसूमूह के समक्ष भजनों की प्रस्तुति करते हुए गायक कलाकार

वाणी में दो आत्मप्रेरक भजनों “जीवन है बेकार, भजन बिन दुनिया में” तथा “हंसा निकल गया पिंजरे से, खाली पड़ी रही तस्वीर” प्रस्तुत किये। फिर कुमारी रशि ने एक भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् परमाराध्या डॉ. माताश्री मंगला जी का प्रवचन हुआ। विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए माताश्री मंगला जी ने कहा कि अध्यात्म ज्ञान ही एक ऐसा माध्यम है जो मानव समाज में आई विसंगतियों को दूर कर उसे सही रास्ते पर ला सकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान

समाज और राष्ट्र के भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। युवाओं को सभी प्रकार के नशा, विसंगति, कुप्रथा और कुसंग से दूर रहना चाहिए। अपने बड़ों, शिक्षकों, गुरुजनों और माता-पिता के दिशा-निर्देशन में रहकर सद्शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए और सदैव इनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए। इस प्रकार अनेक शिक्षाप्रद उपदेशों को देते हुए श्री माता जी ने अपने सम्बोधन को समाप्त किया। श्री सत्यवान जी और कुमारी रशि के भजन के साथ प्रथम दिवस का समारोह सानंद संपन्न हुआ।

हुई थी, ऐसे सैकड़ों लोग प्रातःकाल से ही उपदेश के लिए कतारबद्ध हो गये थे। महात्मा/बाईंगण ने सही जिज्ञासुओं का चयन कर उन्हें आत्मज्ञान का व्यावहारिक बोध कराया। ठीक 10 बजे समस्त दिव्य विभूतियां राजस्थानी परिधान में मंच पर पथारीं। विद्वान विप्रजनों के द्वारा वेदमंत्रों की उच्च ध्वनि के साथ जन्मदिवस की पूजा आरंभ हुई जिसमें समस्त दिव्य विभूतियों के साथ उनके सगे-संबंधी, मित्र, गणमान्यजन और हजारों-हजार प्रेमीभक्त शामिल हुए। दिव्य विभूतियों

को एकसाथ पाकर सभी प्रेमीभक्त अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे। ऐसा सौभाग्य कभी-कभी परमात्मा की कृपा से ही सुलभ होता है। प्रेमीभक्त समवेत उच्च स्वर में जय-जयकार कर रहे थे। वृदावन से पथरे गायकगण विविध प्रकार वधाई और मंगल गीतों का गायन कर रहे थे। सर्वत्र मंगलमय वातावरण बना हुआ था। वैदिक विधि विधान से पूजा संपन्न हुई। तत्पश्चात् श्री महाराज जी और श्री माता जी के दिव्य दर्शन का सभी को सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो लगातार 3 घंटे तक चलता रहा। सभी को दर्शन और प्रसाद प्राप्त हुआ।

सायंकाल ठीक समय पर गुरु वंदना और मंगलाचरण के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ। श्री सत्यवान जी ने “**गुरुदेव मेरी नैया, उस पर लगा देना**” भजन प्रस्तुत किया। इसके बाद श्री श्याम जी ने भजन प्रस्तुत किया। इसके बाद महात्मा शिवकृपानंद जी का संबोधन हुआ जिसमें उन्होंने अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए योग्य पात्र बनने पर जोर दिया। उनका कहना था कि जिसके हृदय में गुरु और ज्ञान के प्रति श्रद्धा होती है, उसी को यह ज्ञान फलीभूत होता है। जैसा कि गीता में कहा गया है- “**श्रद्धावान लभते ज्ञानम्**। कुमारी रशेम ने “**अवधू अंधाधुंध अंधियारा, कोई जाने जानन हारा**” तथा “**अनहद की धुनि प्यारी साथो, अनहद की धुनि प्यारी रे।**” भजन प्रस्तुत किये। इसी बीच परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी का दिव्य परिवार के साथ मंच पर पदार्पण हुआ। दिव्य विभूतियों की झलक पाकर सभी हर्षोल्लास से जय-जयकार करने लगे। श्री श्याम जी ने दो भजन तथा सत्यवान जी ने एक भजन प्रस्तुत किया। इसके बाद परमाराध्या माताश्री मंगला जी का प्रवचन आरंभ हुआ। श्री माता जी ने दस

हजार से अधिक प्रेमीभक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह श्रावण मास है। यह शिवजी का महीना है। श्रावण मास में हर दिन भक्तजन शिव की पूजा-आराधना, जप, तप, व्रत, उपवास करते हैं। भारत के कोने-कोने में कांवड़ियों की बम भोले, बम भोले की ध्वनि सुनाई दे रही है। समस्त वातावरण शिवमय हो गया है। प्रकृति भी अपनी समृद्ध हरियाली के साथ प्रगट हो रही है। उन्होंने कहा कि भक्त का जब भक्तिभाव जागृत होता है तो वह शिव को प्राप्त करने के लिए कठोर संकल्प धारण कर लेता है। जिस भक्त का भक्तिभाव दृढ़, स्थिर और संकल्पबद्ध होता है, वही भक्ति की कक्षा उत्तीर्ण कर पाता है। जैसे वर्षा ऋतु में धरती हरी-भरी दिखाई देती है, वैसे ही सत्संग और संतों के सानिध्य में भक्त का हृदय भक्ति से सरावोर रहता है। इसलिए नित्यप्रति सत्संग और संतों की संगति में लगे रहो। माताश्री मंगला जी ने कहा कि आज श्री भोले जी महाराज का पावन जन्मदिवस है, हम परमपिता परमात्मा, सद्गुरु महाराज एवं जगत जननी श्री माता जी से उनके आरोग्यमय दीर्घ और यशस्वी जीवन की कामना करते हैं। उन्होंने कहा कि श्री भोले जी महाराज के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से आज अनेक सेवा कार्य विस्तृत रूप से संचालित किये जा रहे हैं। उनके ही आशीर्वाद से हजारों हृदयों में अध्यात्म ज्ञान का दीप प्रज्वलित है। श्री भोले जी महाराज का सानिध्य और आशीर्वाद प्राप्त होना हम सभी के लिए बड़ी सौभाग्य की बात है। इसलिए जिन्हें ज्ञान उपदेश है, वे ज्ञान प्रचार में महात्मा/बाईंगण का तन-मन से सहयोग करें, नियमित रूप से भजन-सुमिरण करें और तब तक रुकें नहीं, जब तक कि हृदय ज्ञान से प्रकाशित न हो जाये। सद्गुरु महाराज की कृपा से जहां भी और जब भी कोई सेवा का अवसर मिले

तो, उससे अवश्य लाभ उठायें, क्योंकि यही आपके आत्मकल्याण का कारण बनेगी। भक्ति मार्ग में जो जितना अधिक तपता है, वह उतना ही अधिक चमकता है। सेवा ही सबसे बड़ा तप है। इस प्रकार एक घंटे से भी अधिक समय तक श्री माता जी अपने आशीर्वचनों से भक्त समाज को निहाल करते रहे। एक भजन हुआ फिर श्री संतोष जी ने एक वधाई गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् आरती-वंदना के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

इस प्रकार सभी के सेवा सहयोग से द्विदिवसीय विशाल जनकल्याण समारोह निर्विघ्न रूप से सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। इस समारोह का यही संदेश था कि जीवन में सुख, शांति और आनंद की चाहत है तो अध्यात्म ज्ञान को व्यावहारिक रूप से जीवन में धारण कर उसकी साधना करें। इसके अलावा कोई ऐसा मार्ग व साधना नहीं जो जीवन को शांत बना सके। अनेक तरह की साधनाएं हैं जो जीवन में साधन और सुविधाएं तो प्रदान करती हैं; किन्तु शांति और संतोष नहीं। इसलिए साधन और सुविधाओं से विरत रहकर शाश्वत शांति के मार्ग अध्यात्म ज्ञान को आत्मसात करें, यही इस अमूल्य मानव जीवन का परमोद्देश्य है। इस समारोह को सफल बनाने में स्थानीय पुलिस, प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, गणमान्यजनों, संस्था के महात्मा/बाईंगणों, प्रचारकों, प्रचारक सहयोगियों, श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं, जूनियर सेवकों तथा प्रेमीभक्तों का तन-मन का भरपूर सहयोग मिला, हम सभी का हृदय से धन्यवाद करते हैं। इस प्रकार इस पावन समारोह की अनेक चिरस्मरणीय स्मृतियां हृदय पटल पर अंकित कर तथा आगामी कार्यक्रम की जिज्ञासा लिए प्रेमीभक्त अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान कर गये। ■

# 125वीं श्री हंस जयन्ती के उपलक्ष्य में विशाल जनकल्याण समारोह

सभी भगवद्भक्तों को जानकर अत्यंत हर्ष होगा कि हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर) के तत्वावधान में सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की 125वीं जयन्ती के सुअवसर पर **8 व 9 नवम्बर, 2025 (शनि.-रवि.)** सायं 6 से 9 बजे तक प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस समारोह में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के अध्यात्म-ज्ञान तथा जनकल्याण पर सारगर्भित प्रवचन होंगे। साथ ही



योगीकृष्ण परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

अनेक आत्मानुभवी महात्मा/बाईंगण, प्रबुद्धजनों, समाज सेवकों एवं विद्वानों का प्रवचन और प्रसिद्ध भजन गायकों द्वारा भजन-गायन भी होंगा। इस अवसर पर आत्म-जिज्ञासुओं को अध्यात्म-ज्ञान का व्यावहारिक बोध भी कराया जाएगा।

अतः आप इस समारोह में सपरिवार पधारकर आत्म-कल्याण का मार्ग प्राप्त कर अपने मानव जीवन को सार्थक बनायें। प्रेमी भक्तगण 8 नवम्बर को ही हरिद्वार पहुँचें तथा 9 नवम्बर को कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात अपनी वापसी की व्यवस्था करके आएं। इस कार्यक्रम की सूचना अपने आसपास के क्षेत्र के प्रेमी भक्तों को अवश्य दीजिएगा।

**नोट:** सभी प्रेमी भक्त अपने साथ अपना आधारकार्ड और मतदाता पहचान पत्र अवश्य लेकर आयें।

## निवेदक:-

हंसज्योति (ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर)

संपर्क सूत्र- 8800291788, 8800291288

इस जनकल्याण समारोह का सीधा प्रसारण हंसलोक T.V. पर दोनों दिन सायं 6 से रात्रि 9 बजे तक किया जायेगा। [www.youtube.com/@hanslokTV](https://www.youtube.com/@hanslokTV) <https://www.facebook.com/Hanslok>

## श्री हंसलोक सेवक सूचना

सभी श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं को सूचित किया जाता है कि सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज की 125वीं जयन्ती के सुअवसर पर **8 व 9 नवम्बर, 2025** को **सायं 6 से 9 बजे तक** प्रतिदिन ऋषिकुल मैदान, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में विशाल जनकल्याण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री हंसलोक सेवक/सेविकाओं का **7 से 10 नवम्बर, 2025** तक “सेवा शिविर” लगाया जा रहा है जिसमें सभी सेवक/सेविकाएं समारोह की व्यवस्था से संबंधित विभिन्न कार्यों में सेवा-सहयोग करेंगे। इस अवसर पर 7 नवम्बर, 2025 को अपराह्न 3 बजे से श्री हंसलोक सेवकों का ‘मार्गदर्शन शिविर’ रखा गया है जिसमें सभी सेवक/सेविकाओं का भाग लेना आवश्यक है। अतः सभी दस्तानायक अपने सहयोगी सेवक/सेविकाओं के साथ 6 नवम्बर की शाम तक अथवा 7 नवम्बर, 2025 की प्रातः 8 बजे तक हरिद्वार अवश्य पहुँच जायें। इस समारोह को सफल बनाने में आप सभी का विशेष रूप से सहयोग की अपेक्षित है।

## निवेदक

श्री हंसलोक सेवक संगठन

## सितम्बर, 2025 के पर्व-त्योहार

- 3 सितम्बर बुधवार- परिवर्तिनी एकादशी □ 5 सितम्बर शुक्रवार- ओणम □ 7 सितम्बर रविवार- पितृ पक्ष आरंभ एवं भाद्रपद पूर्णिमा □ 22 सितम्बर सोमवार- शारदीय नवरात्र्र आरंभ □ 30 सितम्बर मंगलवार- दुर्गा महाअष्टमी पूजा



**पावन जन्मोत्सव - श्री भोले जी महाराज, 26 व 27 जुलाई, 2025, नई दिल्ली**



नई दिल्ली, भाटी। हंसज्योति ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज के **पावन जन्मोत्सव** दिनांक 26 व 27 जुलाई, 2025 को **विशाल जनकल्याण समारोह** का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से दस हजार से भी अधिक प्रेमीभक्तों ने भाग लिया। इस समारोह में परमपूज्य श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी एवं महात्मा / बाईंगण ने अपने आध्यात्मिक प्रवचन से जनसमुदाय को लाभान्वित किया। माता श्री मंगला जी ने समझाया कि अपने जीवन में अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त कर दुःख रूपी भवसागर से पार जा सकते हैं। इस अवसर पर पथरे प्रेमीभक्तों के लिए आवास, भोजन एवं चिकित्सा आदि की सुंदर व्यवस्था की गई थी। यह समारोह शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

## श्री गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं!

भगवान श्री गणेश जी मूलाधार चक्र के स्वामी हैं। यहाँ से कुंडलिनी उठनी शुरू होती है। मनुष्य के जीवन का आधार ज्ञान है और ज्ञान के देवता गणेश जी हैं। मूलाधारचक्र को संतुलित, जाग्रत और ज्ञान की प्राप्ति के लिए श्री गणेश जी की आराधना की जाती है। श्री गणेश जी सभी प्रकार के विघ्नों को दूर करते हैं। इसलिए उन्हें विघ्नविनाशक कहा जाता है। ऐसे ज्ञान, बुद्धि और विघ्न विनाशक मंगलमूर्ति श्री गणेश जी को बारंबार नमस्कार है। श्री गणेश चतुर्थी की सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

**- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी**



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788 / 8800291288



/hanslok